श्री रायपसेणीय सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(સચિત્ર)

प्रेरक-संपादक
अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ ૧૩

દ્રવ્યાનુયોગ પ્રધાન રાજપ્રશ્નીય ઉપાંગ સૂત્ર - ૧૩

અન્ય નામ :- રાયપસેણિય, રાયપસેણઈઅ, રાયપ્પસેણઈય, રાયપ્પસેણિય, રાયપ્પસેણઈજ્જ, રાજપ્રસેનકીય, રાજપ્રસેનજિત, રાજપ્રશ્નકૃત.

અધ્યયન ---------- ૧

ઉદ્દેશક ---------- ૧

ઉપલબ્ધ પાઠ ---------- ૨૧૦૦ શ્લોક પ્રમાણ

ગદ્યસૂત્ર ---------- ૬૫

પદ્યસૂત્ર ----------XXX

આ ઉપાંગ આગમ ગ્રંથમાં આમલકલ્પા નગરી, આમ્રશાલ ઉદ્યાનમાં આમ્રશાલ ચૈત્ય, અશોકવૃક્ષ અને શિલાપટ્ટના વર્ણન પછી ભગવાન મહાવીરનું સમવસરણ અને ધર્મપરિષદ વગેરે વાતો જણાવીને સૂર્યાભદેવનું સુંદર વર્ણન છે.

આભિયોગિક દેવના વૈક્રિય સમુદ્‌ઘાત, ૧૬ પ્રકારના રત્નોનાં નામ, જ્ઞાનવિમાનરચનાનો આદેશ, વિવિધ રંગના મણિઓની તુલના વગેરે વર્ણન પછી સિંહાસન અને તેની ચોતરફ ૫૩,૦૦૦ ભદ્રાસનોનું વર્ણન છે.

તે પછી સૂર્યાભદેવ ગૌતમ વગેરે શ્રમણનિર્ગ્રંથો સમક્ષ ૩૨ પ્રકારના દિવ્યનૃત્ય દર્શાવવા માટે ભગવાન મહાવીર પાસે આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરવા વારંવાર પ્રયાસ, ભગવાન મહાવીરનું મૌન, અંતે અનુમતિ પછી ૫૭ પ્રકારના વાદ્ય, ૧૮ પ્રકારના નૃત્ય, ચાર પ્રકારના ગાન, ચાર પ્રકારના અભિનયનું પ્રદર્શન વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

તે પછી સૂર્યાભ વિમાનના દ્વાર ઉપરના ૧૦૮ પ્રકારની ધજા, ચારેય દિશાઓના વનખંડો, દેવછંદક ઉપર ૧૦૮ પ્રતિમાઓ, ચૈત્ય સ્તંભનું પ્રમાર્જન, જિનઅસ્થિઓનું અર્ચન, બલિવિસર્જન વગેરે વર્ણન છે. તથા ભગવાન મહાવીર દ્વારા સૂર્યાભદેવના રાજા પ્રદેશી ના પૂર્વભવનું વર્ણન, તેમાં કરેલી આત્મા વિષે વિસ્તૃત ચર્ચા ને અંતે જિનેશ્વર ભગવાન, શ્રુતદેવતા, ભગવતી પ્રજ્ઞપ્તિ તેમજ ભગવાન પાર્શ્વનાથને નમસ્કાર કરીને ઉપસંહાર કરવામાં આવ્યો છે.

सिरि उसहदेवसामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स। **सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो।** **卐卐卐 श्रीराजप्रश्नीयोपांगम्। 卐卐卐** तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।१। तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए बहिया उत्तरपुच्छिमे दिसीभाए अंबसालवणे नामं चेइए होत्था, पोरणे जाव पडिरूवे।२। असोयवरपायवपुढवीसिलावट्टयवत्तव्वया उववातियगमेणं नेया।३। सेओ राया धारिणी देवी सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव राया पज्जुवासइ ।४। तेणं कालेणं० सूरियाभे देवे सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए सूरियाभंसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तीहिं परिसाहिं सत्तहिं अणियेहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे महयाऽऽहयनट्टगरयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ पासति, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पासति त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए विकसियवरकमलणयणे पयलियवरकडगतुडियकेउरमउडकुंडलहारविरायंतरइयवच्छे पालंबपलंपमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरवरे जाव सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ त्ता पायपीडाओ पच्चोरूहति त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति त्ता सत्तट्ठ पयाइं तित्थयराभिमुहं अणुगच्छति त्ता वामं जाणुं अचेति त्ता दाहिणं जाणं धरणतलंवि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धारं धरणितलंसि णिवेसेइ त्ता ईसिं पच्चुन्नमइ त्ता करतलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं व०-णमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडियवरनाणदंसणधराणं वियट्टच्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरसीणं सिवमयलमरूयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तिं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवन्तं तत्थ गयं इह गते पासइ (प्र० उ) मे भगवं तत्थ गते इह गतंतिकट्टु वंदति णमंसति त्ता सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे।५। तए णं तस्स सूरियाभस्स इमे एतारूवे अब्भत्थिते चिंतिते पत्थिते मणोगते संकप्पे समुप्पज्जित्था. एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाणयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोस्सवि सवणयाए किमंग पुण अहिगमणवंदणणमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए ?, एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवणयस्स सवणयाए ?, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं चेतियं देवयं पज्जुवासामि, एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए णिस्सयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति (प्र० तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए नमंसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए पज्जुवासित्तए) त्तिकट्टु एवं संपेहेइ त्ता आभिओगिये देवे सद्दावेइ त्ता एवं व०-।६। एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्प णयरि अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं तरेह त्ता वंदह णमंसह त्ता साइं

સૌજન્ય :- માતુશ્રી લિલબાઈ હંસરાજ પરિવાર ગામ નવાવાંસ પ્રેરણા :- બીકેશકુમાર (રાયણ)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साइं नामगोयाइं साहेह त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जंकिंचि तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा कयवरं वा असुइं अचोक्खं वा पूइअं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेइ त्ता णच्चोदगं णाइमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासइ त्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेह त्ता जलथरयभासुरप्पभूयस्स बिंटट्ठाइस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जाणु (प्र० जण्णु) स्सेहपमाणमित्तं ओहिं वासं वासह त्ता कालागुरूपवरकुंदुरूक्कतुरूक्कधूवमघमघंतगंधुद्धूयाभिरामं सुगंधवरगंधियं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह कारवेह त्ता य खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।७। तए णं ते आभियागिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठजावहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमंति त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरन्ति, तं०-रयणाणं वयराणं वेरूलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं (प्र० पुग्गलाणं) सोगंधियाणं जोइरसाणं अंजणपुलगाणं अंजणाणं रयणाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं० अहाबायरे पुग्गले परिसाडंति त्ता अहासुहुमे पुग्गले परियायंति त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति त्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जयणाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा णयरी जेणेव अंबसालवणे चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छन्ति त्ता समणं भगवं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति त्ता वंदति नमंसंति त्ता एवं व०-अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोगिया देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।८। देवाइ ! समणे भगवं महावीरे ते देवा एवं व०-पोराणमेयं देवा ! जीयमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं देवा ! आइन्नमेयं देवा ! अब्भणुण्णायमेयं देवा ! जण्णं भवणवइवाणमंतरजोइसियवेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसति त्ता तओ साइं २ णामगोयाइं साहिंति तं पोराणमेयं देवा ! जाव अब्भणुण्णायमेयं देवा ! ।९। तए णं ते आभिओगिया देवा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठजावहियया समणं भगवं० वंदंति णमंसंति त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरंति तं०-रयणाणं जाव रिट्ठाणं० अहाबायरे पोग्गले परिसाडंति त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता संवट्टवाए विउव्वंति, से जहानामए भइयदारए सिया तरूणे जुगवं बलवं (जुवाणे प्र०) अप्पायंके थिरसंघयणे थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणिपायपिट्ठंतरोरूपरिणए घणनिचियवट्टवलियखंधे चम्मेट्ठगदुघणमुट्ठियसमाहयगत्ते उरस्सबलसमन्नागए तलजमलजुयल (फलिहनिभ पा०) बाहू लंघणपवणजइणपमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं दंडसंपुच्छणिं वा सलागाहत्थगं वा वेणुसलाइयं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेपुरं वा देवकुलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अतुरियमचवलमसंभंते निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता संपमज्जेज्जा एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टवाए विउव्वंति त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमण्डलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा तहेव सव्वं आहुणिय २ एगंते एडेंति त्ता खिप्पामेव उवसमंति त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणन्ति त्ता अब्भवद्दलए विउव्वन्ति से जहाणामए भइगदारगे सिया तरूणे जाव सिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा दगकुंभगं वा आरामं वा जाव पवं वा अतुरियं जाव सव्वतो समंता आवरिसेज्जा एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभियोगिया देवा अब्भवद्दलए विउव्वंति त्ता खिप्पामेव पयणुतणायन्ति त्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति त्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति त्ता खिप्पामेव उवसामंति त्ता तच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता पुप्फवद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए मालागारदारए सिया तरूणे जाव सिप्पोवगए एगं महं पुप्फ-(१४३) पडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फछज्जियं वा गहाय रायंगणं वा जाव सव्वतो समंता कयग्गाहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेज्जा एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवद्दलए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउव्वंति त्ता खिप्पामेव पयणुतणायन्ति त्ता जाव जोयणपरिमण्डलं जलथलयभासुरप्पभूयस्स बिंटट्ठाइस्स दसद्धवन्नकुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणमेत्तं ओहिवासं वासंति त्ता कालागुरूपवरकुंदुरूक्कतुरूक्कधूवमघमंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभिगमणजोगं करंति कारयंति खिप्पामेव उवसामंति त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियातो अंबसालवणातो चेइयाओ पडिनिक्खमंति त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणे २ जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति त्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।१०। तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं आभियोगियाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेति त्ता एवं व०-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुसरघंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं व०-आणवेति णं भो सूरियाभे देवे गच्छति णं भो सूरियाभे देवे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए अंबसालवणे चेतिते समणं भगवं महावीरं अभिवंदए तुब्भेऽवि णं भो देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए जाव णातियरवेणं णियगपरिवाल सद्धिं संपरिवुडा सातिं सातिं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह।११। तए णं से पायत्ताणियाहिवती देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहियए एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति त्ता जेणेव सुरियाभे विमाणे सभा सुहम्मा जेणेव मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दा जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छति त्ता तं मेघोघरसितगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुसर घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेति, तए णं तीसे मेघोघरसितगंभीरमहुरसद्दाते जोयणपरिमंडलाते सुसराते घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए से सूरियाभे विमाणे पासायविमाणणिक्खुडाडियसद्दघंटापडिंसुयासयसहस्ससंकुले जाए यावि होत्था, तए णं तेसिं सूरियाभविमाणवासिणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्तनिच्चप्पमत्तविसयसुंहमुच्छियाणं सुसरघंटारवविउलबोलपडिबोहणे कए समाणे घोसणकोउहलदिन्नकन्नएगग्गचित्तउवउत्तमाण साणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि णिसंतपसंतंसि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वदासी हंत सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य ! सूरियाभविमाणवइणो वयणं हियसुहत्थं आणावणियं (प्र० आणवेइ णं) भो ! सूरियाभे देवे गच्छइ णं भो सूरियाभे देवे जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए तं तुब्भेऽवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए० अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह।१२। तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य पायत्ताणियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठजावहियया अप्पेगइया वंदणवत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए एवं संमाणवत्तियाए कोउहल्लवत्तियाए अप्पे० असुयाइं सुणिस्सामो सुयाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो अप्पे० सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तमाणा अप्पे० अन्नमन्नमणुयत्तमाणा अप्पे० जिणभत्तिरागेणं अप्पे० धम्मोत्ति अप्प० जीयमेयंतिकट्टु सव्विड्ढीए जाव अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवंति।१३। तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणसिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति त्ता हट्ठतुट्ठजावहियए आभिओगियं देवं सद्दावेति त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररूसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गयवरवइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालियं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलियमहुरमणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउणाचियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सविच्छिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णामं दिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि त्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।१४। तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठजावहियए करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणेइ त्ता उत्तरपुरच्छिमं

For Private & Personal Use Only

दिसीभागं अवक्कमति त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव अहाबायरे पोग्गले० त्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ त्त दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव दिव्वं जाणविमाणं विउव्विउं पवत्ते यावि होत्था, तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवए विउव्वति, तं०-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेसिं तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पं० तं०-वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरूलियामया खंभा सुवण्णरूप्पमया फलगा लोहितक्खमइयाओ सूईओ वयरामया संधी णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ य पासादीया जाव पडिरूवा, तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ तोरणा णाणामणिमएसु थंभेसु उवनिविट्ठसण्णिविट्ठविविहमुत्तंतरोवचिया विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा, तेसिं णं तोरणाणं उप्पि अट्ठट्ठमंगलगा पं० तं०-सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणा (प्र० जाव पडिरूवा) तेसिं च णं तोरणाणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झए जाव सुक्किलचामरज्झए अच्छे सण्हे रूप्पपट्टे वइरामयदंडे जलयामलगंधिए सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे विउव्वति, तेसिं णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्तातिच्छत्ते घंटाजुगले पडागाइपडागे उप्पलहत्थए कुमुदणलिणसुभग सोगंधियपोंडरीयमहापोंडरीयसतपत्तसहस्सपत्तहत्थए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे विउव्वति, तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिवस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेति वा मुइंगपुक्खरेइ वा सरतलेइ वा करतलेइ वा चंदमंडलेइ वा सूरमंडलेइ वा आयंसमंडलेइ वा उरब्भचम्मेइ वा (प्र० वसहचम्मेइ वा) वराहचम्मेइ वा सीहचम्मेइ वा वग्घचम्मेइ वा मिगचम्मेइ वा छगलचम्मेइ वा दीवियचम्मेइ वा अणेगसंकुकीलकसहस्सवितए आवडपच्चावडसे ढिपसेढिसोत्थिय (सोवत्थि) पूसमाणग (वद्धमाणग) मच्छंडगमगरंडगजारामाराफुल्लावलिपउम-पत्तसागरतरंगवसंतलयपउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए तं०-किण्हेहिं णीलेहिं लोहिएहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं, तत्थ णं जे ते किण्हा मणी तेसिं णं मणीणं इमे एतारूवे वण्णावासे पं०, से जहानामए जीमूतएइ वा अंजणेइ वा खंजणेइ वा कज्जलेइ वा गवलेइ वा गवलगुलियाइ वा भमरेइ वा भमरावलियाइ वा भमरपतंगसारेति वा जंबूफलेति वा अद्दारिट्ठेइ वा परहुतेइ वा गएइ वा गयकलभेइ वा किण्हसप्पेइ वा किण्हकेसरेइ वा आगासथिग्गलेइ वा किण्हासोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा किण्हबंधुजीवेइ वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे (प्र० ओवम्मं समणाउसो !) ते णं किण्हा मणी इत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव पिअतराए चेव मणामतराए चेव मणुण्णतराए चेव वण्णेणं पं०, तत्थ णं जे ते नीला मणी तेसिं णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पं०, से जहानामए भिंगेइ वा भिंगपत्तेइ वा सुएइ वा सुयपिच्छेइ वा चासेइ व चासपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीभेदेइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाइ वा उच्चन्तेइ वा वणरातीइ वा हलघरवसणे वा मोरग्गीवाइ वा अयसिकुसुमेइ वा बाणकुसुमेइ वा अंजणकेसियाकुसुमेइ वा नीलुप्पलेइ वा णीलबंधुजीवेइ वा णीलकणवीरेइ वा, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पं०, तत्थ णं जे ते लोहियगा मणी तेसिं णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पं०, से जहाणामए उरब्भरूहिरेइ वा ससरूहिरेइ वा नररूहिरेइ वा वराहरूहिरेइ वा महिसरूहिरेइ वा बालिंदगोवेइ वा बालदिवाकरेइ वा संघब्भरागेइ वा गुंजद्धरागेइ वा जासुअणकुसुमेइ वा किंसुयकुसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा जाइहिंगुलएति वा सिलप्पवालेति वा पवालअंकुरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खारसगेति वा किमिरागकंबलेति वा चीणपिट्ठरासीति वा रत्तुप्पलेइ वा रत्तासोगेति वा रत्तकणवीरेति वा रत्तुबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पं०, तत्थ णं जे ते हालिद्दा मणी तेसिं रठ मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पं०, से जहाणामए चंपेति वा चंपगउल्लीति वा चंपगभेएइ वा हलिद्दाइ वा हलिद्दाभेदेति वा हलिद्दगुलियाति वा हरियालियाति वा हरियालभेदेति वा हरियालगुलियाति वा चिउरेइ वा चिउरंगरातेति वा वरकणगेइ वा वरकणनिघसेइ वा सुवण्णसिप्पाएति वा वरपुरिसवसणेति वा अल्लकीकुसुमेति वा चंपाकुसुमेइ वा कुहंडियाकुसुमेइ वा तडवडाकुसुमेइ वा घोसेडियाकुसुमेइ वा सुवण्णजूहियाकुसुमेइ वा सुहिरण्णकुसुमेति वा कोरंटवरमल्लदामेति वा बीयकुसुमेइ वा पीयासोगेति वा पीयकणवीरेति वा पीयबंधुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पं०, तत्थ णं जे ते सुक्किल्ला मणी तेसिं णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पं०, से जहानामए अंकेति वा संखेति वा चंदेति वा कुंदेति वा दंतेइ वा (प्र० कुमुदोदकदयरयदहिघणगोक्खीरपूर) हंसावलीइ वा कोंचावलीति वा हारावलीति वा चंदावलीति वा सारतियबलाहएति वा धंतधोयरूप्पपट्टेइ वा सालिपिट्ठरासीति वा कुंदपुप्फारासीति वा कुमुदरासीति वा कुक्कच्छिवाडीति वा पिहुणमिंतियाति वा भिसेति वा मुणालियाति वा गयदंतेति वा लवंगदलएति वा पोंडरीयदलएति वा सेयासोगेति वा सेयकणवीरेति वा सेयबन्धुजीवेति वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किल्ला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वन्नेणं पं०, तेसिं णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पं०, से जहानामए कोट्ठपुडाण वा तगरपुडाण वा एलापुडाण वा चोयपुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरूआपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतगिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण वा अगुरूपुडाण वा लवंगपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा वासपुडाण वा अणुवायंसि वा ओभिज्जमाणाण वा कोट्टिज्जमाणाण वा भंजिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा परिभाइज्जमाणाण वा भंडाओ वा भंडं साहरिज्जमाणाण वा ओराला मणुण्णा मणहरा घाणमणनिव्वुतिकरा सव्वता समंता गंधा अभिनिस्सवंति, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव गंधेणं पं०, तेसिं णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए आइणेति वा रूएति वा बूरेइ वा णवणीएइ वा हंसगब्भतूलियाइ वा सिरीसकुसुमनिचयेइ बालकुसुमपत्तरासीति वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव फासेणं पं०, तए णं से आभियोगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठ अब्भुग्गयसुकयवरवेइयातोरणवररइयसालभंजियागं सुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थवेरूलियविमलखंभं णाणामणिखचियउज्जलबहुसमसुविभत्तदेसभायं ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररूसरभचमर कुंजर वणलयपउमल यभत्तिचित्तं (प्र० खंभुग्गयवइर वेइयपरिगया भिरामं विज्जाहरजमल जुगलजन्तजुत्तंपिव अच्चीसहस्स मालिणीयं रूवगसहस्सं कलितं भिसमाणं भिब्भि समाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं) कंचणमणिरयणथूभियागं णाणाविहपंचवण्ण घंटापडागपरिमंडि यग्गसिहरं चवलं मरीतिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं गोसीस (सरस) रत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं उवचियचंदणकलसं चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरूपवरकुंदुरूक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं तुडियसद्दसंपणाइयं अच्छरगणसंघविप्पकिण्णं पासाइयं दरिसणिज्जं जाव पडिरूवं, तस्स णं पिच्छाघरमंडवस्स बहुसमरमणिज्जभूमिभागं विउव्वति जाव मणीणं फासो, तस्स णं पेच्छाघरमंडवस्स उल्लोयं विउव्वति पउमलयभत्तिचित्तं जाव पडिरूवं, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति. तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं मणिपेढियं विउव्वति अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयं अच्छं सण्हं जाव पडिरूवं, तीसे णं मणिणिपेडियाए उवरि एत्थ णं महेगं सिंहासणं विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पं०-तवरिज्जमया चक्कला रययामया सीहा सोवणिया पाया णाणामणि मयाइं पायसीसगाइं जंबूणयमयाइं गत्ताइं वइरामया संधी णाणामणिमयं वेच्चं, से णं सीहासणे इहामिय उसभतुरगनरमगर विहगवालगकिन्नररूसरभचमरक चंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते सारसारोवचियमणिरयणपायवीढे अच्छरगमिउमसूरगणवतयकुसंतलिम्बकेसरपच्चत्थुयाभिरामे सुविरइयरयत्ताणे उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए सुरम्मे आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासे मउउए पासाईए०, तस्स णं सिंहासणस्स उवरि एत्थ णं महेगं विजयदूसं विउव्वंति संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं, तस्स णं सीहासणस्स उवरिं विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं वयरामयं अंकुसं विउव्वंति, तस्सिं च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिक्कं मुत्तादामं विउव्वंति, से णं कुंभिक्के मुत्तादामे अन्नेहिं चउहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं तदद्धुच्चत्तपमाणेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरगमंडियग्गा णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभियसमुदाया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता वाएहिं पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं मंदायं २ एइज्जमाणा २ पलंबमाणा २ पेज्जंज (पज्झंझ) माणा २ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कण्णमणणिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा सिरीए अतीव २ उवसोभेमाण चिट्ठंति, तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सिंहासणस्स अवरूत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरिआभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अब्भिंतरपरिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ, एवं दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति, तस्स णं सीहासणस्स चउदिसिं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तं०-पुरच्छिमेणठ चत्तारि साहस्सीओ दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पं० से जहानामए अइरूग्गयस्स वा हेमंतियबालसूरियस्स वा खयरिंगालाण वा रत्तिं पज्जलियाण वा जावाकुसुमवणस्स वा किंसुयवणस्स वा पारियायवणस्स वा सव्वतो समंता संकुसुमियस्स, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेण पं०, गंधो य कासो य जहा मणीणं, तए णं से आभिओगिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ त्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणंति ।१५। तए णं से सूरिआभे देवे आभिओगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठजावहियए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति त्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहिं अणीएहिं, तं०- गंधव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहती त्ता जेणेव सिंहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तए णं तस्स सुरिआभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहंति त्ता पत्तेयं २ पुव्वण्णत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाण विमाणं जाव दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहंति त्ता पत्तेयं २ पुव्वण्णत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरूढस्स समाणस्स अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिता तं०- सोत्थियसिरिवच्छजावदप्पणा, तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगार० दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरतिया आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेंजती ऊसीया गगणतलमणुलिहंती पुरतो अणुपुव्वीए संपत्थिया, तयाणंतरं च णं वेरूलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडलनिभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकरामरपरिग्गहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं, तयाणंतरं च णं वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सुस्सिए (प्र० स्सपरिमंडियाभिरामे) वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिते तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोअणसहस्समूसिए महतिमहालए महिंदज्झए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए, तयाणंतरं च णं सुरूवणेवत्थपरिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भडचडगरपहगरेणं पंचअणीयाहिवइणो पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया (प्र० तयाणंतरं च णं बहवे आभिओगिया देवा देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ विसेसेहिं सएहिं २ विदेहिं (प्र० विहवेहिं) सएहिं २ णिज्जोएहिं (प्र० णेज्जाएहिं) सएहिं २ णेवत्थेहिं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया,) तयाणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव रवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति ।१६। तए णं से सुरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिक्खित्तेणं वइरामयवट्टलट्ठसंठिएणं जाव जोयणसहस्समूसिएणं महतिमहालतेणं महिंदज्झएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरतो कड्ढिज्जमाणेणं चउहिं सामाणियसहस्सेहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहिं य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सोधमस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेमाणे २ पडिजागरेमाणे जेणेव सोहम्मकप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति त्ता जोयणसयसाहस्सितेहिं विग्गेहेहिं ओवयमाणे वीतीयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे जेणेव नंदीसरवरदीवे जेणेव दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरपव्वते तेणेव उवागच्छति त्ता तं दिव्वं देविड्ढिं जाव दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे २ पडिसंखेवेमाणे २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ त्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता समणस्स भगवतो महावीरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे तं दिव्वं जाणविमाणं ईसि चउरंगुलमसंपत्तं धरणितलंसि ठवेइ त्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहिं अणीयाहिं तं०-गंधव्वाणीएण य नट्टाणीएण य सद्धिं संपरिवुडे ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरूहति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरूहति, अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरूहंति, तए णं से सूरियाभे देवे चउहिय अग्गमहिसहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति त्ता वंदति नमंसति त्ता एवं व०-अहं णं भंते ! सूरियाभे देवे देवाणुप्पियं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि ।१७। सूरियाभाति ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं व०-पोराणमेयं सुरियाभा ! जीयमेयं सूरियाभा ! किच्चमेयं सूरियाभा ! वरणिज्जमेयं सूरियाभा ! आइण्णमेयं सुरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जण्णं भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदति नमंसति त्ता तओ पच्छा साइं २ नामगोत्ताइं साहिंति, तं पोराणमेयं सूरियाभा ! जाव अब्भणुन्नायमेयं सूरियाभा ! ।१८। तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति ।१९। तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव परिसा जामेव दिसिय पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।२०। तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहयहियए उट्ठाए, उट्ठेति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ त्ता एवं व०--अहन्नं भंते ! सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिते सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी परित्तसंसारिते अणंतसंसारिए सुलभबोहिए दुल्लभवोहिए आराहते विराहते चरिमे अचरिमे ?, सूरिया-(१४४) भाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं व०-सूरियाभा ! तुमं णं भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिते जाव चरिमे णो अचरिमे ।२१। तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० चित्तमाणंदिए परमसोमणस्से समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता एवं व०-तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह (प्र० सव्वओ जाणह सव्वओ पासह) सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह जाणंति णं देवाणुप्पिया मम पुव्विं वा पच्छा वा इमेयारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभागं लद्धं पत्तय अभिसमण्णागयंति तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए ।२२। तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाति णो परियाणति तुसिणीए संचिट्ठति, तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चंपि एवं व०-तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह जाव उवदंसित्तएत्तिकट्टु समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदति नमंसति त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति त्ता वेउव्वियासमुग्घाएणं समोहणति त्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति त्ता अहाबायरे० अहासुंहुमे० दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति से जहानामए आलिंगपुक्खरेइ

Jain Education International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा जाव मणीणं फासो, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे पिच्छाघरमंडवं विउव्वति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णतो अंतो बहुसमरमणिज्जभूमिभागं विउव्वइ उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति तीसे णं मणिपेढियाए उवरि सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठंति, तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स आलोए पणामं करेति त्ता अणुजाणउ मे भगवंतिकट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे सण्णिसण्णे, तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवचियमि-सिमिसिंतविरतियमहाभरणकडगतुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेति, तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं एगाभरणवसणगहियणिज्जोआणं दुहतोसंवलियग्गणियत्थाणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणिद्धगेविज्जकं चुयाणं उप्पीलियचित्तपट्टपरियरसफेणकावत्तरइयसंगयपलंबवत्थंतचित्तचिल्ललगनियंसणाणं एगावलिकंठरइयसोभंतवच्छपरिहत्थभूसाणाणं अट्ठसयं णट्टसज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छति, तयाणंतरं च णं णाणामणि जाव पीवरं पलंब वामं भुयं पसारेति, तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वतीणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं एगाभरणवसणगहियनिज्जोयाणं दुहतोसंवेल्लियग्गनियत्थीणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेवेज्जकंचुईणं णाणामणिरयणभूसणविराइयंगमंगीणं चंदाणणाणं चंदद्धसमनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्काइव उज्जोवेमाणीणं सिंगारागारचारूवेसाणं हसियभणियचिट्ठियविलासललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाणं गहियाउज्जाणं अट्ठसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारियाणं णिग्गच्छइ, तए णं से सूरियाभे देवे अट्ठसयं संखाणं विउव्वति अट्ठसयं संखवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं सिंगाणं विउव्वइ अट्ठसयं सिंगवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं संखियाणं विउव्वइ अट्ठसयं संखियवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं खरमुहीणं विउव्वइ अट्ठसयं खरमुहिवाइयाणं विउव्वइ अट्ठसयं पेयाण विउव्वति अट्ठसयं पेयावायगाणं० अट्ठसयं पीरपीरियाणं विउव्वइ एवमाइयाइं एगूणपण्णं आउज्जविहाणाइं विउव्वइ त्ता तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य सद्दावेति, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयो य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा हट्ठ जाव जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावित्ता एवं व०-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं कायव्वं, तए णं से सूरियाभे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेह त्ता वंदह नमंसह त्ता गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसइबद्धं णट्टविहिं उवदंसेह त्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयो य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठजाव करयल जाव पडिसुणंति त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति त्ता समणं भगवं महावीरं जाव नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छंति, तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारीयो य सममेव समोसरणं करेंति त्ता सममेव पंतिओ बंधति त्ता सममेव पंतिओ नमंसंति त्ता सममेव पंतीओ अवणमंति त्ता सममेव उन्नमंति त्ता एवं सहितामेव ओनमंति एवं सहितामेव उन्नमंति त्ता थिमियामेव ओणमंति थिमियामेव उन्नमन्ति संगयामेव ओनमंति संगयामेव उन्नमंति त्ता सममेव पसरंति त्ता सममेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति सम मेव पवाएंसु पगाइंसु पणच्चिंसु, किं ते ?, उरेण मंदं सिरेण तारं कंठेण वितारं तिविहं तिसमयरेयगरयइयं गुंजावक्ककुहरोवगूढं रत्तं तिठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजतवंसतंतीतलतालललयगहसुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मिउरिभियपयसंचारं सुरइ सुणइ वरचारूरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पपगीया यावि होत्था, किं ते ?, उद्धमंताणं संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं आहंमंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जमाणाणं भंभाणं होरंभाणं (प्र० वीणाणं वियधी (पंची) णं) तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं आलवंताणं (प्र० मुरयाणं) मुइंगाणं नन्दीमुइंगाणं उत्तालिज्जंताणं आलिंगाण कुतुंबाणं गोमुहीणं मद्दलाणं मुच्छिज्जंताणं वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं कुट्टिज्जंताणं महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं सारिज्जंताणं वद्धीसाणं सुघोसाणं णंदिघोसाणं फुट्टिज्जंतीणं भामरीणं छब्भामरीणं परिवायणीणं छिप्पंताणं तूणाणं तुंबवीणाणं आमोडिज्जंताणं आमोताणं कुंभाणं नउलाणं अच्छिज्जंतीणं मुगुंदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमाणं किणियाणं कडंबाणं दद्दरगाणं दद्दरिगाणं कुतुंबाणं कलसियाणं मड्डयाणं आवडिज्जंताणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तलाणं तालाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंगिरिसियाणं लत्तियाणं मगरियाणं सुंसुमारियाणं फुमिज्जंताणं वंसाणं वेलूणं वालीणं परिल्लीणं बद्धगाणं, तए णं से दिव्वे गीए दिव्वे नट्टे दिव्वे वाइए एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुन्ने मणहरे गीते मणहरे नट्टे मणहरे वातिए उप्पिंजलभूते कहकहगभूते दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणमंगलभत्तिचित्तं णामं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेति १ ।२३। तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सममेव समोसरणं करेंति त्ता तं चेव भाणियव्वं जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स आवडपच्चावडसेढिपसेढिसोत्थियसोवत्थिअपूसमाणगमच्छंडमगरंडजारामारा-फुल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगयसंतलतापउमलयभत्तिचित्तं० उवदंसेति २, एवं च एक्केक्कियाए णट्टविहीए समोसरणादीया एसा वत्तव्वया जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य समणस्स भगवतो महावीरस्स इहामियउसभतुरगनरमग-रविहगवालगकिंनररूरूसरभचमर कुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं० उवदंसेति ३, एगतोवक्कं दुहओवक्कं (एगतोखुहं दुहओखुहं) एगओचक्कवालं दुहओचक्कवालं चक्कद्धचक्कवालं उवदंसंति ४, चंदावलिपविभत्तिं च वलयावलिपविभत्तिं च हंसावलिपविभत्तिं च सूरावलिपविभत्तिं च एगावलिपविभत्तिं च तारावलिपविभत्तिं च मुत्तावलिपविभत्तिं च कणगावलिपविभत्तिं च रयणावलिपविभत्तिं च उवदंसति ५, चंदुग्गमणपविभत्तिं च सूरुग्गमणपविभत्तिं च उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं च उवदंसेति ६, चंदागमणपविभत्तिं च सूरागमणपविभत्तिं च आगमणागमणपविभत्तिं च उवदंसंति ७, चंदावरणपविभत्तिं च सूरावरणपविभत्तिं च आवरणाऽऽवरणपविभत्तिं च उवदंसंति ८, चंदत्थमणपविभत्तिं च सूरत्थमणपविभत्तिं च अत्थमणऽत्थमणपविभत्तिं च उवदंसंति ९, चंदमंडलपविभत्तिं च सूरमंडलपविभत्तिं च नागमंडलपविभत्तिं जक्खमंडलपविभत्तिं भूतमंडलपविभत्तिं च (प्र० रक्खस०महोरग० गंधव्व० पिसायमंडलपविभत्तिं च) उवदंसेति १०, उसभललियवक्कंतं सीहललियवक्कंतं हयविलंबि (लसि) यं गयविलंबि (लसि) यं मत्तहयविलसियं मत्तगयविलसियं दुयविलंबियं उवदंसति ११, (प्र० सगडुद्धिपविभत्तिं च) सागरपविभत्तिं च नागरपविभत्तिं च सागरनागरपविभत्तिं च उवदंसंति १२, णंदापविभत्तिं च चंपापविभत्तिं च नन्दाचंपापविभत्तिं च १३, मच्छंडापविभत्तिं च मयरंडापविभत्तिं च जारापविभत्तिं च मारापविभत्तिं च मच्छंडामयरंडाजारामारापविभत्तिं च १४, कत्तिककारपविभत्तिं च खत्तिखकारपविभत्तिं च गत्तिगकारपविभत्तिं च घत्तिघकारपविभत्तिं च ङत्तिङकारपविभत्तिं च ककारखकारगकारघकारघङकारपविभत्तिं च १५, एवं चवग्गोवि १६, टवग्गोवि १७, तवग्गोवि १८, पवग्गोवि १९, असोयपल्लवपविभत्तिं च अंबपल्लवपविभत्तिं च जंबूपल्लवपविभत्तिं च कोसंबपल्लवपविभत्तिं च पल्लवपल्लवपविभत्तिं च २०, पउमलयापविभत्तिं च जाव सामलयापविभत्तिं च लयालयापविभत्तिं च २१,दुयमाणं २२, विलंबियं० दुयविलंबियं० अंचियं० रिभियं० अंचिरिमियं० आरभडं० भसोलं० आरभडभसोलं० ३०, उप्पयानिवयपवत्तं संकुचियं पसारियं रयारइयभंतसंभंतं ३१, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स पुव्वभवचरियणिबद्धं च देवलोयचरियनिबद्धं च चवणचरियणिबद्धं च संहरणचरियनिबद्धं च जम्मणचरियनिबद्धं च अभिसेयचरियानिबद्धं च बालभावचरियनिबद्धं च जोव्वणचरियनिबद्धं च कामभोगचरियनिबद्धं च निक्खमणचरियनिबद्धं च तवचरणचरियनिबद्धं च णाणुप्पायचरियनिबद्धं च तित्थपवत्तणचरियनि० परिनिव्वाणचरियनिबद्धं च चरिमचरियनिबद्धं च ३२, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य चउव्विह वाइत्तं वाएंति तं०-ततं विततं घणं झुसिरं, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं गेयं गायंति तं०-उक्खित्तं पायत्तं मंदायं रोइयावसाणं च, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसन्ति तं०-अंचियं रिभियं आरभडं भसोलं, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य चउव्विहं अभिणयं अभिणयेंति तं०-दिट्ठंतियं पाडंतियं सामन्तोवणिवाइयं अंतोमज्झावसाणियं, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य गोयमादियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्ता समणं भगवं महावीरं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदंति नमंसंति त्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।२४। तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविडिंढ दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ त्ता खणेणं जाते एगे एगभूए, तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदति णमंसति त्ता नियगपरिवाल सद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुरूहति त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगये ।२५। भंतेति भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता एवं व०-सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते कहिं अणुपविट्ठे ?, गोयमा ! सरीरं गते सरीरं अणुपविट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सरीरं गते सरीरं अणुपविट्ठे ?, गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहतो लित्ता दुहतो गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा, तीसे णं कूडागारसालाते अदूरसामंते एत्थ णं महेगे जणसमूहे चिट्ठंति, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं व वासवद्दलगं वा महावायं वं एज्जमाणं पासति त्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ताणं चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति-सरीरं अणुपविट्ठे ।२६। कहिं णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे णामं विमाणे पं० ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुईओ जोयणकोडीओ० बहुईओ जोयणसयसहस्सकोडीओ उड्ढं दूरं वीतीवइत्ता एत्थ णं सोहम्मे कप्पे नामं कप्पे पं० पाईणपडीणआयते उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिते अच्चिमालिभासरासिवण्णाभे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं इत्थ णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं भवंतीति मक्खायं, ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं विमाणाणं बहुमज्जदेसभाए पंच वडिंसया पं० तं०-असोगवडिंसते सत्तवन्नवडिंसते चंपकवडिंसते चूयगवडिंसते मज्झे सोहम्मवडिंसए, ते णं वडिंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तस्स णं सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पं० अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं गुणयालीसं च सयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अद्ध य अडयाले जोयणसते परिक्खेवेणं, से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, से णं पागारे तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं मूले एगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्झे पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं उप्पिं परवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वकणगामए अच्छे जाव पडिरूवे, से णं पागारे णाणाविहुपंचवन्नेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते तं०-किण्हेहिं नीलेहिं लोहितेहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं कविसीसएहिं, ते णं कविसीसगा एगं जोयणं आयामेणं अद्धजोयणं विक्खभेणं देसूणं जोयणं उड्ढंउच्चत्तेणं सव्वमणि (रयणा) मया अच्छा जाव पडिरूवा. सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं २ भवतीति मक्खायं, ते णं दारा पंचजोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा इहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिन्नररूरूसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवरवयरवेइयापरिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चिसहस्समालिणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा ससिरीयरूवा वण्णओ दाराणं तेसिं होइ, तं०-वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरूलियमया सूइखंभा जायरूवोवचियवरपंचवन्नमणिरयणकोट्टिमतला हंसगब्भमया एलुया गोमेज्जमया इंदकीला लोहियक्खमतीतो दारचेडीओ जोईरसमया उत्तरंगा लोहियक्खमईओ सूइओ वयरामया संधी नाणामणिमया समुग्गया वयरामया अग्गला अग्गलापासाया रययामयाओ आवत्तणपेढियाओ अंकुत्तरपासगा निरंतरियघणकवाडा भित्तीसु चेव भित्तिगुलित्ता छप्पन्ना तिण्णि होंति गोमाणसिया तत्तिया णाणामणिरयणवालरूवगलीलट्ठिअसालभंजियागा वयरामया कुड्डा रयया (घ्र० णा) मया उस्सेहा सव्वतवणिज्जमया उल्लोया णाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगलोहियक्खपडिवंसगरययभोमा अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ जोइरसामया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रयणामईओ पट्टियाओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुच्छणीओ सव्वसेयरययामयाच्छायणे अंकामया कणगकूडतवणिज्जथूभियागा सेया संखदलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासा तिलगरयणद्धचंदचित्ता नाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।२७। तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस २ चंदणकलसपरिवाडीओ पं०, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चगा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महया २ इंदकुंभसमाणा पं० समणाउसो !, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस २ णागदंतपरिवाडीओ पं०, ते णं णागदंता मुत्ताजालंतरूसियहेमजालगवक्खजालखिंखिणी (घंटा) जालपरिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियसुसंपग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया २ गयदंतसमाणा पं० समणाउसो !, तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तबद्धवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा णील० लोहित० हालिद्द० सुक्किल्लसुत्तट्ठग्घारितमल्लदामकलावा, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवन्नपयरमंडियगा जाव कन्नमणणिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, तेसिं णं णागदंताणं उवरिं अन्नाओ सोलस २ नागदंतपरिवाडीओ पं०, ते णं णागदंता तं चेव जाव महता २ गयदंतसमाणा पं० समणाउसो !, तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पं०, तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरूलियामईओ धूवघडीओ पं०, ताओणं धूवघडीओ कालागुरूपवरकुंदुरूक्कतुरूक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयंभिरामाओ सुगंधवरगंधियातो गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता जाव चिट्ठंति, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस २ सालभंजियापरिवाडीओ पं०, ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुयइट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाविहराग वसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठिगिज्झसुमज्झाओ आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरइयसंठियपीवरपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसाओ मिउविसय पसत्थ लक्खणसंवेल्लि यग्गसिरयाओ ईसिं असोगवर पायवसमुट्ठियाओ वामहत्थग्गहि यग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्ख चिट्ठिएणं लूसमाणीओविव चक्खुल्लोयणलेसे अन्नमन्नं खेज्जमाणीओ (विव) पुढवीपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चन्दाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का (विव उज्जोवेमाणाओ) विज्जुघणमिरियसूरदिप्पंततेयअहिययरसन्निकासाओ सिंगारागारचारूवेसाओ पासा० दरसि० (अभि० पडि०) चिट्ठंति ।२८। तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस २ जालकडगपरिवाडीओ पं०, ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पहिरूवा, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस २ घंटापरिवाडीओ पं०, तासिं णं घंटाणं इमेयारूवे वन्नावासे पं० तं०-जंबूणयामईओ घंटाओ वयरामयाओ लालाओ णाणामणिमया घंटापासा तवणिज्जमइयाओ संखलाओ रययामयाओ रज्जूतो, ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ कुंचस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरणिग्घोसाओ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कन्नमणनिव्वुइकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ जाव चिट्ठंति, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस वणमालापरिवाडीओ पं०, ताओ णं वणमालाओ णाणामणिमयदुमलयकिसलयपल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाणा सोहंतसस्सिरीयाओ पासाईयाओ०, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस पगंठगा पं०, ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पासायवडेंसगा पं०, ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिअपहसियाइव विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतपडागच्छत्ताइच्छत्तकलिगा तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरूम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयरणद्धचंदचित्ता णाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा जाव दामा उवरिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगंठाणं झया छत्ताइच्छत्ता, तेसिं णं दाराणं उभओ पासे सोलस २ तोरणा पं० णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा जाव पउमहत्थगा, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो सालभंजियाओ पं० जहा हेट्ठा तहेव, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो नागदंता पं० जहा हेट्ठा जाव दामा, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एवं वीहीओ पंतीओ मिहुणाइं, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो पउमलयाओ जाव सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवाओ, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो अक्खंय (दिसा) सोवत्थिया पं० सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, ते सिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चंदणकलसा पं०, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा तहेव, तेसिं णं तोरणाणं पुरतो दो दो भिंगारा पं०, ते णं भिंगारा वरकमलपइट्ठाणा जाव महया मत्तगयमुहाकितिसमाणा पं० समणाउसो !, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो आयंसा पं०, तेसिं णं आयंसाणं इमेयारूवे वन्नावासे पं० तं०-तवणिज्जमया पगंठगा वेरूलियमया सुरया वइरामया दोवारंगा णाणामणिमया मंडला अणुग्घसितनिम्मलाते छायाते समणुबद्धा चंदमंडलपडिणिकासा महया अद्धकायसमाणा पं० समणाउसो !, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो वइरनाभथाला पं० अच्छतिच्छडियसालिंतंदुलणहसंदिट्ठपडिपुन्नाइव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया जाव पडिरूवा महया २ रहचक्कवालसमाणा पं० समणाउसो !, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ पातीओ० ताओ णं पाईओ अच्छोदगपरिहत्थाओ णाणामणिपंचवन्नस्स फलहरियगस्स बहुपडिपुन्नाओविव चिट्ठंति सव्वरयणामईओ अच्छा जाव पडिरूवाओ महया० गोकलिंजरचक्कसमाणीओ पं० समणाउसो !, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो सुपइट्ठा पं० णाणाविहभंडविरइयाइव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ पं०, तासु णं मणगुलियासु बहवे सुवन्नरूप्पमया फलगा पं०, तेसु णं सुवन्नरूप्पमएसु फलगेसु बहवे वयरामया नागदंतया पं०, तेसु णं वयरामएसु (१४५) णागदंतएसु बहवे वयरामया सिक्कगा पं०, तेसु णं वयरामएसु सिक्कगेसु किण्हसुत्तसिक्कगवच्छिता णीलसुत्तसिक्कगवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कगवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कगवच्छिया सुक्किल्लसुत्तसिक्कगवच्छिया बहवे वायकरगा पं०, सव्वे वेरूलियमया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पं०, से जहानामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरूलियमणिफलिडपडलपच्चोयडे साते पहाते ते पतेसे सव्वतो समंता ओभासति उज्जोवेति तवति भा (पगा) सति एवामेव तेऽवि चित्ता रयणकरंडगा साते पभाते ते पएसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पगासंति, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठगा उसभकंठा सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं हयकंठएसु जाव उसभकंठएसु दो दो पुप्फचंगेरीओ (मल्लचंगेरीओ) चुन्नचंगेरीओ गंधचंगेरीओ वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ लोमहत्थचंगेरीओ पं० सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तासु णं पुप्फचंगेरीआसु जाव लोमहत्थचंगेरीसु दो दो पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो सीहासणा पं०, तेसिं णं सीहासणाणं वन्नओ जाव दाम, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो रूप्पमया छत्ता पं०, ते णं छत्ता वेरूलियविमलदंडा जंबूणयकन्निया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वोउयसुरभी सीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो चामराओ पं०, ताओ णं चामराओ (चंदप्पभवेरूलियवरनानामणिरयणखचियचित्तदण्डाओ) णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासातो सुहुमरययदीहवालातो सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तेसिं णं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयगस० तगरस० एलास० हरियालस० हिंगुलयस० मणोसिलास० अंजण० सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।२९। सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झयाणं अट्ठसयं मिगज्झयाणं गरूडज्झयाणं छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं उसभज्झयाणं अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं नागवरकेऊणं एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे असीयं केउसहस्सं भवतीति मक्खायं, सूरियाभे णं विमाणे पण्णट्ठिं भोमा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०, तेसिं णं भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा, तेसिं णं भोमाणं भूमिभागाणं च बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं २ सीहासणे सीहासणवन्नतो सपरिवारो अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं २ भद्दासणा पं०, तेसिं णं दाराणं उत्तमागारा (उवरिमागारा पा०) सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तं०-रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं, तेसिं णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा सज्झया जाव छत्तातिच्छत्ता एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीत्तिमक्खायं, सूरियाभस्स णं विमाणस्स चउद्दिसिं पंच जोयणसयाइं अबाहाए चत्तारि वणसंडा पं० तं०-पुरच्छिमेणं असोगवणे दाहिणेणं सत्तवन्नवणे पच्चत्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चूयगवणे, ते णं वणखंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पत्तेयं २ पागारपरिक्खित्ता किण्हा किण्होभासा वणखंडवन्नओ।३०। तेसिं णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा, से जहानामए आलिंगपुक्खरेति वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिया, तेसिं णं गंधो फासो णेयव्वो जहक्कमं, तेसिं णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहिं वातेहिं मंदायं २ एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरिदाणं केरिसए सद्दे भवति ?, गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा संदमाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्झयस्स सघंटस्स सपडागस्स सतोरणवरस्स सनंदिघोसस्स सखिंखिणिहेमजालपरिक्खित्तस्स हेमवयचित्ततिणिसकणगणिज्जुत्तदारूयायस्स संपिनद्धचक्कमंडलधुरागस्स कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियस्स सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियस्स सकंकडावयंसगस्स सचावसरपहरणावरणभरियजुज्झसज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतेउरंसि वा रम्मंसि वा मणिकुट्टिमतलंसि अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स वा नियट्टिज्जमाणस्स वा ओराला मणोण्णा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणिस्सवंति, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जहानामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अंके सुपइट्ठियाए कुसलनरनारीसुसंपरिग्गहियाते चंदणकोणपरियट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि मंदायं मंदायं वेइयाए पवेइयाए चालियाए घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जहानामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवणगयाण वा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाण वा हिमवंतमलयमंदरगिरिगुहासमन्नागयाण वा एगओ सन्निहियाणं समागयाणं सन्निसन्नाणं समुवविट्ठाणहं पमुइयपक्कीलियाणं गीयरइगंधव्वहसियमणाणं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पयबद्धं पायबद्धं उक्खित्तायपयत्तायं मंदाय रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं छदोसविप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्ठगुणोववेयं गुंजंतवसकुहरोवगूढं रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतवंसतहतीतलताललयगहसुसंपउत्तं महुरं समं सुललियमणोहरं मउयरिभियपयसंचारं सुणतिं वरचारूरूवं दिव्वं णट्टं सज्जं गेयं पगीयाणं, भवे एयारूवे सिया ?, हंता सिया।३१। तेसिं णं वणसंडाणं तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहुओ खुड्डाखुडियातो वावीयाओ पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतिआओ सरसरपंतिआओ बिलपंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ समतीरातो वयरामयपासाणातो तवणिज्जतलाओ सुवण्णसुब्भरययवालुयाओ वेरूलियमणिफालियपडलपच्चोयडाओ सुओयारसुउत्ताराओ णाणामणिसुबद्धाओ चउक्कोणाओ अणुपुव्वसुजातवप्पगंभीरसीयलजलाओ संछन्नपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पलकुमुय नलिणसुभगसोगंधियपोंडरीयसयवत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छविमलसलिलपुण्णाओ अप्पेगइयाओ आसवोयगाओ अप्पे० वारूणोयगाओ अप्पे० खीरोयगाओ अप्पे० घओयगाओ अप्पे० खोदोयगाओ अप्पे० खारोयगाओ अप्पे० उयगरसेण पं० पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ, तासिं णं वावीणं जाव बिलपंतीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवा पं०, तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं वन्नओ तोरणाणं झया छत्ताइच्छत्ता य णेयव्वा, तासु णं खुड्डाखुडियासु वावीसु जाव बिलपंतियासु तत्थ २ तहिं २ देसे बहवे उप्पायपव्वया नियइपव्वया जगइपव्वया दारूपव्वयगा दगमंडवा दगणालगा दगमंचगा उसड्डा खुड्डखुड्डगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं उप्पायपव्वएसु जाव पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोंचासणाइं गरूलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं पक्खासणाइं भद्दासणाइं उसभासणाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीहासणाइं पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं, तेसु णं वणसंडेसु तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहवे आलियघरगा मालियघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मंडणघरगा पसाहणघरगा गब्भघरगा मोहणघरगा सालघरगा जालघरगा चित्तघरगा कुसुमघरगा गंधव्वघरगा आयंसघरगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं आलियघरगेसु जाव आयंसघरगेसु बहूइं हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थिआसणाइं सव्वरयणामयाइं जाव पडिरूवाइं, तेसु णं वणसंडेसु तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जातिमंडवगा जूहियमंडवगा णवमालियमंडवगा वासंतियमंडवगा सूरमल्लियमंडवगा दहिवासुयमंडवगा तंबोलिमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलयामंडवगा अतिमुत्तयलयामंडवगा आप्फोवगा९ मालुयामंडवगा अच्छा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, तेसु णं जालिमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु बहवे पुढवीसिलापट्टगा हंसासणसंठिया जाव दिसासोवत्थियासणसंठिया अण्णे य बहवे मंसलघुट्ठविसिट्ठसंठाणसंठिया पुढवीसिलापट्टगा पं० समणाउओ ! आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति कीलंति किट्टंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपडि (र) क्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।३२। तेसिं णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ पासायवडंसगा पं०, ते णं पासायवडेंसगा पंचजोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव तहेव बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं०-असोए सत्तपण्णे चंपए चूए, सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पं० तं०-वणसंडविहूणे जाव बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति जाव विहरंति, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे एत्थ णं महेगे उवगारियालयणे पं० एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसं जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे।३३। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण य सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढंउच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं उवकारियलेणसमा परिक्खेवेणं, तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णवासे बं० (तं०-वयरामया णिम्मा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरूलियामया खंभा सुवण्णरूप्पमया फलगा लोहियक्खमईओ सूईओ नाणामणिमया कडेवरा णाणामणिमया कडेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया पक्खबाहाओ जोइरसामया वंसा वंसकवेल्लुगा रइयामईओ पट्टियाओ जातरूवमई ओहाडणी वइरामया उवरिपुच्छणी सव्वरयणामई अच्छायणे पा०), सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं गवक्खजालेणं खिंखिणीजालेणं घंटाजालेणं मुत्ताजालेणं मणिजालेणं कणगजालेणं रयणजालेणं पउमजालेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं (दामा पा०) तवणिज्जलंबूसगा जाव चिट्ठंति, तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा पासादीया जाव वीहीतो पंतीतो मिहुणाणि लयाओ, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-पउमवरवेइया २ ?, गोयमा !पउमवरवेइया णं तत्थ २ देसे २ तहिं २ वेइयासु वेइयाबाहासु य वेइयफलतेसु य वेइयपुडंतरेसु य खंभेसु खंभबाहासु खंभसीसेसु खंभपुडंतरेसु सुयीस सुयीमुखेसु सूईफलएसु सूइपुडंतरेसु पक्खेसु पक्खबाहासु पक्खपेरंतेसु पक्खपुढंतरेसु बहुयाइं उप्पलाइं पउमाइं कुमुयाइं णलिणातिं सुभगाइं सोगंधियाइं पुंडरीयाइं महापुंडरीयाणि सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं पडिरूवाइं महया वासिकंच्छत्तसमाणाइं पं० समणाउसो ! से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्इ-पउमवरवेइया २, पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया असासया ?, गोयमा ! सिय सासया सिय असासया, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्इ-सिय सासया सिय असासया ?, गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया वन्नपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति-सिय सासया सिय असासया, पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! ण कयावि णासी ण कयावि णत्थि न कयावि न भविस्सइ भुविं च हवइ य भविस्सइ य धुवा णिइया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया, से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं

Jain Education International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवयारिलेणसमे परिक्खेवेणं, वणसंडवण्णतो भाणितव्वो जाव विहरंति, तस्स णं उवयारियालेणस्स चउदिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पं० वण्णओ तोरणा झया छत्ताइच्छत्ता, तस्स णं उवयारियालयणस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पं० जाव मणीणं फासो ।३४। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगे पासायवडेंसए पं०, से णं पासायवडिंसते पंच जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णतो भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, ते णं मूलपासायवडेंसगे अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, ते णं पासायवडेसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं जाव वण्णओ, ते णं पासायवडिंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडिंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढंउच्चत्तेणं बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमिभागे उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदद्धुच्चत्तपमाणमेत्तहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढंउच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खभेणं वण्णओ उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं पासायउवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।३५। तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं सभा सुहम्मा पं० एगं जोयणासयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंनिविट्ठा अब्भुग्गयसुकयवयरवेइयातोरणवररइयसालिभंजियागा जाव अच्छरगणसंघविप्पकिण्णा पासादीया०, सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पं० तं०-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ, तेसिं णं दाराणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता, तेसिं णं दाराणं पुरओ पत्तेयं २ मुहमंडवा पं०, ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइठ विक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं वण्णओ सभाए सरिसो, तेसिं णं मुहमंडवाणं तिदिसिं ततो दारा पं० तं०-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ, तेसिं णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया, तेसिं णं मुहमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता, तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं २ पेच्छाघरमंडवे पं० मुहमंडववत्तव्वया जाव दारा भूमिभागा उल्लोया, तेसिं णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वइरामए अक्खाडए पं०, तेसिं णं वयरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं २ मणिपेढिया पं०, ताओ णं मणिपेढियातो अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ सीहासणे पं० सीहासणवण्णओ सपरिवारो, तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरि अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पं० ताओ णं मणिपेढियातो सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ पडिरूवाओ, तासिं णं उवरिं २ थूभे पं०, ते णं थूभा सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं सेया संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिगासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं थूभाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तेसिं णं थूभाणं चउद्दिसिं पत्तेयं २ मणिपेढियातो पं०, ताओ णं मणिपेढियातो अट्ठजोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवातो तेसिं णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारिं जिणपडिमातो जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ संपलियंकनिसन्नाओ थूभाभिमुहीओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति तं०-उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा, तेसिं णं थूभाणं पुरतो पत्तेयं २ मणिपेढियातो पं०, ताओ णं मणिपेढियातो सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ जाव पडिरूवातो, तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ चेइयरूक्खे पं०, ते णं चेइयरूक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अद्धजोयणं उव्वेहेणं [illegible] जोयणाइं खंधा अद्धजोयणं विक्खंभेणं छ जोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पं०,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं णं चेइयरूक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पं० तं०-वयरामया मूला रययसुपइट्ठिया सुविडिमा रिट्ठामयविउला कंदा वेरूलिया रूइला खंधा सुजायवरजायरूवपढमगा विसालसाला नाणामणिमयरयणविविहसाहप्पसाहा वेरूलियपत्ततवणिज्जपत्तबिंटा जंबूणयरत्तमउयसुकुमालपवालसोभिया वरंकुरग्गसिहरा विचित्तमणिरयणसुरभिकुसुमफलभरनमियसाला अहियं मणनयणणिव्वुइकरा अमयरससमरसफला सच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया०, तेसिं णं चेइयरूक्खाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता, तेसिं णं चेइयरूक्खाणं पुरतो पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पं०, ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ महिंदज्झया पं०, ते णं महिंदज्झया सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जोयणं उव्वेहेणं जोयणं विक्खंभेणं वइरामया वट्टलट्ठसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवरपंचवण्णकुडभिसहस्सपरिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागा छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गयणतलमभिलंघमाणसिहरा पासादीया० अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तेसिं णं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं २ नंदा पुक्खरिणीओ पं०, ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छाओ जाव वण्णओ एगइयाओ उदगरसेणं पं०, पत्तेयं २ पउमवरवेइया परिक्खित्ताओ पत्तेयं २ वणसंडपरिक्खित्ताओ, तासिं णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पं०, तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ तोरणा झया छत्तातिच्छत्ता, सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पं० तं०-पुरच्छिमेणं सोलस साहस्सीओ पच्चत्थिमेणं सोलस साहस्सीओ दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ उत्तरेणं अट्ठ साहस्सीओ, तासु णं मणागुलियासु बहवे सुवण्णरूप्पमया फलगा पं०, तेसु णं सुवन्नरूप्पमएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंतगा पं०, तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु किण्हसुत्तवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा० चिट्ठंति, सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पं० जहा मणोगुलिया जाव णागदंतगा, तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पं०, तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वेरूलियामईओ धूवघडियाओ पं०, ताओ णं धूवघडियाओ कालागुरूपवर जाव चिट्ठंति, सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पं० जाव मणीहिं उवसोभिए मणिफासो य उल्लोओ य, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पं० सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयी जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं माणवए चेइयखंभे पं० सट्ठिं जोयणाइं उड्ढंउच्चेत्तेणं जोयणं उव्वेहेणं जोयणं विक्खंभेणं अडयालीसं अंसिए अडयालीसं सइकोडीए अडयालीसं सइविग्गहिए सेसं जहा महिंदज्झयस्स, माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरिंबारस जोयणाइं ओगाहेत्ता हेट्ठावि बारस जोयणाइं वज्जेत्ता मज्झे छत्तीसाए जोयणेसु एत्थ णं बहवे सुवण्णरूप्पमया फलगा पं०, तेसु णं सुवण्णरूप्पामएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंता पं०, तेसु णं वइरामएसु नागदंतेसु बहवे रययामया सिक्कगा पं०, तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पं०, तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गाएसु बहवे (हूओ) जिणसकहातो संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति तातो णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जातो, माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलया झया छत्ताइच्छत्ता ।३६। तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पं०, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे सीहासणे वण्णतो सपरिवारो, तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पं० अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पं०, तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णावासे पं० तं०-णाणामणिमया पडिपाया सोवन्निया पाया णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं जंबूणयामयाइं गत्तगाइं वयरामया संधी णाणामणिमए विच्चे रययामया तूली तवणिज्जमया गंडोवहाणया लोहियक्खमया बिब्बोयणा, से णं सयणिज्जे उभओ बिब्बोयणे दुहतो उण्णते मज्झे णयगंभीरे सालिंगणवट्टिए गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे

Jain Education International - 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासे मउते ।३७। तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरच्छिमेणं महेगा मणिपेढिया पं० अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयी जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे खुड्डए महिदज्झए पं० सट्ठिं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं जोयणं विक्खंभेणं वइरामया वट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठजावपडिरूवा उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तस्स णं खुड्डागमहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चोप्पाले नाम पहरणकोसे पं० सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरणखग्गगयाधणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिक्खित्ता चिट्ठंति उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया०, सभाए णं सुहम्माए उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।३८। सभाए णं सुहम्माए (१४६) उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पं० एगं जोयणसयं आयामेणं पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं सभागमेणं जाव गोमाणसियाओ भूमिभागा उल्लोया तहेव, तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पं० सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पं० सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं सव्वरयणामए जाव पडिरूवे, एत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिक्खित्तं संचिट्ठति, तासिं णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पं० तं०-तवणिज्जमया हत्थतलपायतला अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलोहियक्खपडिसेगाइं कणगामईओ जंघाओ कणगामया जाणू कणगामया ऊरूकणगामईओ गायलट्ठीओ तवणिज्जमयाओ नाभीओ रिट्ठामईओ रोमराईओ तवणिज्जमया चुचूया तवणिज्जमया सिरिवच्छासिलप्पवालमया ओट्ठा फालियामया दंता तवणिज्जमईओ जीहाओ तवणिज्जमया तालुया कणगामईओ नासिंगाओ अंतोलोहियक्खपडिसेगाओ अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि रिट्ठामईओ ताराओ रिट्ठामयाणि अच्छिपत्ताणि रिट्ठामईओ भमुहाओ कणगामया कवोला कणगामया सवणा कणगामईओ णिडालपट्टियातो वइरामईओ सीसघडीओ तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ रिट्ठामया उवरिं मुद्धय तासिं णं जिणपडिमाणं पिट्ठतो पत्तेयं छत्तधारगपडिमाओ पं०, ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिमरययकुंदेंदुप्पसाइं सकोरेंटमल्लदामाइं धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं धारेमाणीओ चिट्ठंति, तासिं णं जिणपडिमाणं उभओ पासे पत्तेयं चामरधारपडिमातो पं०, ताओ णं चामरधारपडिमातो णाणामणिकणगरयणविमलमहरिह जाव सलीलं धारेमाणीओ चिट्ठंति, तासिं णं जिणपडिमाणं पुरतो दो दो नागपडिमातो भूयपडिमातो जक्खपडिमाओ कुंडधारपडिमाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव चिट्ठंति, तासिं णं जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठसयं घंटाणं अट्ठसयं कलसाणं अट्ठसयं भिंगाराणं एवं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं मणोगुलियाणं वायकरणं गाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं अट्ठसयं धूवकडूच्छुयाणं संनिक्खित्तं चिट्ठति, सिद्धायतणस्स णं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ।३९। तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा उववायसभा पं० जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगे हरए पं० एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं तहेव, तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पं० सुहम्मागमएणं जाव गोमाणसियाओ मणिपेढिया सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठंति, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स बहुअभिसेयभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठइ अट्ठट्ठमंगलगा तहेव, तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा अलंकारियसभा पं० जहा सभा सुधम्मा मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं सीहासणं सपरिवारं, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहुअलंकारियभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठति सेसं तहेव, तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा ववसायसभा पं० जहा उववायसभा जाव सीहासणं सपरिवारं मणिपेढिया अट्ठट्ठमंगलगा, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स महेगे पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठइ, तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पं० तं०-रयणामयाइं पत्तगाइं रिट्ठामइयो कंबिआओ तवणिज्जमए दोरे नाणामणिमए गंठी वेरूलियमए लिप्पासणे रिट्ठमए छंदणे तवणिज्जमई संकला रिट्ठामई मसी वइरामई लेहणी रिट्ठामयाइं अक्खराइं धम्मिए सत्थे, ववसायसभाए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा, तीसे णं ववसायसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं नंदापुक्खरिणी पं० हरयसरिसा, तीसे णं णंदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुरच्छिमेणं महेगे बलिपीढे पं० सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ।४०। तेणं कालेणं० सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ तं०-आहारपज्जत्तीए सरीर० इंदिय० आणपाण० भासामणपज्जत्तीए, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-किं मे पुव्विं करणिज्जं किं मे पच्छा करणिज्जं किं पुव्विं सेयं किं मे पच्छा से यं किं मे पुव्विंपि पच्छावि हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ?, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवमब्भत्थियं जाव समुप्पन्नं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धाविन्ति त्ता एवं व०-एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमित्ताणं अट्ठसयं संनिक्खित्तं चिट्ठंति, सभाए णं सुहम्माए माणवए चेइए खंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूइओ जिणसकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति, ताओ णं देवाणुप्पियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपि पच्छावि हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ।४१। तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं सामाणियपरिसोववन्नगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहयहियए सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति त्ता उववायसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति त्ता हरयं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ त्ता पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरूहइ त्ता जलावगाहं० जलमज्जणं० जलकिड्डं० जलाभिसेयं करेइ त्ता आयंते चोक्खे परमसुईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ त्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति त्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति त्ता एवं व०-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पदां सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह, तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववन्नेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठा जाव हियया करंयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति त्ता संखेज्जाइं जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सावन्नियाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं रूप्पमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं सुवण्णरूप्पमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं सुवन्नमणिमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं रूप्पमणिमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं सुवण्णरूप्पमणियाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं, एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपतिट्ठाणं रयणकरडगाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं छत्ताणं चामराणं तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं अट्ठसहस्सं धूवकडुच्छुयाणं विउव्वंति त्ता ते साभाविए य वेउव्विए य कलसे य जाव कडुच्छुएय गिण्हंति त्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडिनिक्खमंति त्ता ताए उक्किट्ठाए चवलाए जाव तिरियंमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणे २ जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छति त्ता खीरोयगं गिण्हंति जाइं तत्थ उप्पलाइं ताइं गेण्हंति जाव सयसहस्सपत्ताइं गिण्हंति त्ता जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति त्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति त्ता जेणेय समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति त्ता तित्थोदगं गेण्हंति त्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति त्ता जेणेव गंगासिंधुरत्तारत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति त्ता सलिलोदगं गेण्हंति त्ता उभओ कूलमट्टियं गेण्हंति त्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति त्ता सव्वतुयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति त्ता जेणेव पउमपुंडरीयदहे तेणेव उवागच्छंति त्ता दहोदगं गेण्हंति त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति त्ता जेणेव हेमवयएरण्णवयाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासाइं जेणेव रोहियरोहियंसासुवण्णकूलरूप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति सलिलोदगं गेण्हंति त्ता उभओ कूलमट्टियं गिण्हंति त्ता जेणेव सद्दावातिवियडावातिपरियागा वट्टवयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सव्वतुयरे तहेव जेणेव महाहिमवंतरूप्पिवासहरपव्वंया तेणेव उवागच्छंति तहेव जेणेव महापउममहापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति त्ता दहादगं गिण्हंति तहेव जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरिहरिकंतनरनारीकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति तहेव जेणेव गंधावइमालवंतपरियाया वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव तहेव जेणेव णिसढणीलवंतवासधरपव्वया तहेव जेणेव तिगिच्छिकेसरिद्दहा तेणेव उवागच्छंति त्ता तहेव जेणेव महाविदेहे वासे जेणेव सीतासीतोदा महाणदीओ तेणेव तहेव जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति त्ता तित्थोदगं गेण्हंति त्ता जेणेव सव्वंतरणईओ जेणेव सव्ववक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति सव्वतुयरे तहेव जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति सव्वतुयरे सव्वपुप्फे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गिण्हंति त्ता जेणेव णदणवणे तेणेव उवागच्छंति त्ता सव्वतुयरे जाव सव्वोसदिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं गिण्हंति त्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति सव्वतुयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधिए य गंधे गिण्हंति त्ता एगतो मिलायंति त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावितिं त्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेंति, तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवारातो तिन्नि परिसाओ सत्त अणियाहिवईणो जाव अन्नेवि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहिं य वरकमलपइट्ठाणेहि य सुरभिवरवारिपडिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चएहिं आविद्धकंठगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं सुकुमालकोमलकरयलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतूयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं य सव्विड्ढीए जाव वाइएणं महया २ इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया २ इंदाभिसेए वट्टमाणे अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोयगं नातिमट्टियं पविरलप्पफुसियरयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति अप्पे० हयरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति अप्पे० आसियसंमज्जिबओलित्तं सुइसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेंति अप्पे० मंचाइमंचकलियं करेंति अप्पे० णाणाविहरागोसियझयपडागाइपडागमंडियं करेंति अप्पे० लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं करेंति अप्पे० उवचिचंदणकलसं चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति अप्पे० आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेंति अप्पे० पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति अप्पे० कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धूयाभिरामं करेंति अप्पे० सुगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं करेंति अप्पे० हिरण्णवासं वासंति सुवण्णवासं वासंति रययवासं वासंति वइरवासं० पुप्फवासं- फलवासं० मल्लवासं० गंधवासं० चुण्णवासं० आभरणवासं वासंति अप्पे० हिरण्णविहिं भाएंति एवं सुवन्नविहिं रयणविहिं भाएंति एवं सुवन्नविहिं रयणविएं (प्र० वयरविहिं) पुप्फविहिं फलविहिं मल्लविहिं चुण्णविहिं वत्थविहिं गंधविहिं तत्थ अप्पेगतिया देवा आभरणविहिं भाएंति, अप्पेगतिया चउव्विहं वाइतं वाइंति तं०- ततं विततं घणं झुसिरं, अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं०- उक्खित्तायं पायत्तायं मंदायं रोइतावसाणं अप्पेगतिया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसंति अप्पे० विलंबियणट्टविहिं० अप्पे० दुतविलंबियं णट्टविहिं० एवं अप्पे० अंचियं नट्टविहिं उवदंसेंति अप्पे० रिभियं नट्टविहिं अप्पे० अंचियरिभियं एवं आरभडं भसोलं आरभडभसोलं उप्पयनिचयपमत्तं संकुचियपसारियं रियारियं भंतसंभतणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पे० चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति, तं०- दिट्ठंतियं पाडंतियं पाडंतियं सामंतोवणिवाइयं लोगअंतोमज्झावसाणियं, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति अप्पे० पीणेंति अप्पे० वासंति अप्पे० अक्कारेंति अप्पे० विणंति अप्पे० तंडवेंति अप्पे० वग्गंति अप्पे० अप्फोडेंति अप्पे० अप्फोडेंति वग्गंति अप्पे० तिवइं छिंदंति अप्पे० हयहेसियं करेंति अप्पे० हत्थिगुलगुलाइयं० अप्पे० रहघणघणाइयं० अप्पे० हयहेसियहहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयं० अप्पे० उच्छोलेंति अप्पे० पच्छोलेंति अप्पे० उक्किट्ठियं करेंति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पे० तिन्निवि अप्पे० ओवयंति अप्पे० उप्पयंति अप्पे० परिवयंति अप्पे० तिन्निवि अप्पे० सीहनायंति अप्पे० पाददद्दरयं अप्पे० भूमिचवेडं दलयंति अप्पे० तिन्निवि अप्पे० गज्जंति अप्पे० गज्जंति अप्पे० विज्जुयायंति अप्पे० वासं वासंति अप्पे० तिन्निवि करेंति अप्पे० जलंति अप्पे० तवंति अप्पे० पतवेंति अप्पे० तिन्निवि अप्पे० हक्कारेंति अप्पे० थुक्कारेंति अप्पे० धक्कारेंति अप्पे० साइं २ नामाइं साहेंति अप्पे० चत्तारिवि अप्पेगइया देवा देवसन्निवायं करेंति अप्पे० देवुज्जोयं करेंति अप्पे० देवुक्कलियं करेंति अप्पे० देवकहकहगं करेंति अप्पे० देवदुहदुहगं करेंति अप्पे० चेलुक्खेवं करेंति अप्पे० उप्पलहत्थगया जाव सयसहस्सपत्तहत्थगया अप्पे० कलसहत्थगया जाव धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठतुट्ठजावहियया सव्वतो समंता आहावंति परिधावंति, तए णं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ महया २ इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति त्ता पत्तेयं २ करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व०- जय २ नंदा जय जय भद्दा जय जय नंदा ! भद्दं ते अजियं जिणाहि जियं च पालेहि जियमज्झे वसाहि इंदोइव देवाणं चंदोइव ताराणं चमरोइव असुराणं धरणोइव नागाणं भरहोइव मणुयाणं बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अन्नेसिं च बहूणं सूरियाभविमाणवरसीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव महया २ कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्तिकट्टु जय २ सद्दं पउंजंति, तए णं से सूरियाभे देवे महया २ इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे अभिसेयसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति त्ता जेणेव अलंकारियसभा अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अणुप्पयाहिणीकरेमाणे अलंकारियसभं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा अलंकारिभंडं उवट्ठवेंति, तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लुहेति त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति त्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्त हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियन्तकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति त्ता हारं पिणद्धेति त्ता अद्धहारं पिणद्धेइ त्ता एगावलिं पिणद्धेति त्ता मुत्तावलिं पिणद्धेति त्ता रयणावलिं पिणद्धेइ त्ता एवं अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं मउडं पिणद्धेइ त्ता गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ त्ता दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गायाइं भुखंडेइ दिव्वं च सुमणदाणं पिणद्धेइ ।४२। तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति त्ता अलंकारियसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ त्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति ववसायसभं अणुपयाणीकरेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति जेणेव सीहासणवरए जाव सन्निसन्ने, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा पोत्थरयणं उवणें(प्र० णमं)ति, तते णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति त्ता पोत्थयरयणं मुयइ त्ता पोत्थरयणं विहाडेइ त्ता पोत्थयरयणं वाएति त्ता धम्मियं ववसायं गिण्हति त्ता पोत्थयरयणं पडिनिक्खिवइ त्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति त्ता ववसायसभातो पुरच्छिमिल्लेणं दारणं पडिनिक्खमइ त्ता जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति त्ता णंदापुक्खरिणिं पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ त्ता हत्थपादं पक्खालेति त्ता आयंते चोक्खेपरमसुइभूए एगं महं सेयं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिसमाणं भिंगारं पगेण्हति त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति त्ता णंदातो पुक्खरिणीतो पच्चोरुहति त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।४३। तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अन्ने य बहवे सूरियाभ जाव देवीओ य अप्पेगतिया देवा उप्पलहत्थगया जाव सयसहस्सपत्तहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठतो २ समणुगच्छंति, तए णं तं सूरियाभं देवं बहवे आभिओगिया' देवा य देवीओ य अप्पेगतिया कलसहत्थगया जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगता हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं देवं पिट्ठतो समणुगच्छंति, तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहि य सूरियाभ जाव देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णातियरवेणं जेणेव उवागच्छति त्ता सिद्धायतणं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति त्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति त्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेति त्ता लोमहत्थगं गिण्हति त्ता जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ त्ता जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ त्ता सुरभिगंधकासाइएणं गायाइं लूहेति त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजूयलाइं नियंसेइ त्ता पुप्फ रुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं वन्नारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ त्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ त्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति त्ता जिनपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं अट्ठट्ठमंगले आलिहइ तं० - सोत्थियं जाव दप्पणं, तयाणंतरं. च णं चंदप्पभरयणवइरवेरुलियमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवगघमघंतगंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्धगन्थजुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ त्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ त्ता वामं जाणुं अंचेइ त्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ त्ता ईसिं पच्चुण्णमइ त्ता करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व० - नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, वंदइ नमसइ त्ता जेणेव देवच्छंदए० जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ त्ता सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जति दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ त्ता कयग्गाहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं करेइ त्ता धूवं दलयइ जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति त्ता लोभहत्थगं परामुसइ त्ता दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोभहत्थएणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ त्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ त्ता आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयइ त्ता जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ त्ता बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ त्ता कयग्गाहगहिय जाव धूवं दलयइ त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ त्ता लोभहत्थगं परामुसइ त्ता दारचेडीओ य सालिभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ त्ता पुप्फ रुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ त्ता आसत्तोसत्त० कयगाहग्गहिय० छूवं दलयइ त्ता जेणेव दाहिणिल्लमुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ त्ता लोभहत्थं परामुसइ त्ता थंभे य सालिभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पम० जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव धूवं दलयइ त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरच्छिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसति दारचेडीओ तं चेव सव्वं जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवाग्छइ त्ता दारचेडीओ य तं चेव सव्वं जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वयरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता लोभहत्थगं परामुसइ त्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं दलेइ त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरच्छिमिल्ले दारे तं चेव दाहिणे दारे तं चेव, जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ त्ता थूभं मणिपेढियं च दिव्वाए दगधाराण अब्भुक्खेइ सरसेण गोसीस० चच्चए दलेइ त्ता पुप्फारुहणं आसत्तो जाव धूवं दलेइ जेरेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिला जिणपडिमा तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तं चेव सव्वं (१४७) जेणेव पुरच्छिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरच्छिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ तं चेव, दाहिणिल्ला मणिपेढिया दाहिणिल्ला जिणपडिमा तं चेव, जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ त्ता तं चेव, जेणेव दाहिणिल्लए महिंदज्झए जेणेव दाहिणिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति लोमहत्थगं परामुसति तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए सालिभं जियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीचंदणेणं० पुप्फ रुहणं० आसत्तोसत्त० धूवं दलयति, सिद्धाययणं

Jain Education International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति त्ता तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ले मंहिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ तं चेव जाव जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छति जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूमे तहेव, जेणेव पच्चत्थिमिल्ला पेढिया पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तं चेव, उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे तेणेव उवागच्छति त्ता जा चेव दाहिणिल्लवत्तव्वया सा चेव सव्वा पुरच्छिमिल्ले दारे दाहिणिल्ला खंभपंती तं चेव सव्वं, जेणेव उत्तरिल्ले मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तं चेव सव्वं, पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव० उत्तरिल्ले दारे दाहिणिल्ला खंभपंती सेसं तं चेव सव्वं, जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तं चेव, जेणेव सिद्धायतणस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ त्ता तं चेव जेणेव पुरच्छिमिल्ले मुहमंडवे जेणेव पुरच्छिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ त्ता तं चेव, पुरच्छिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरच्छिमिल्ले दारे तं चेव, जेणेव पुरच्छिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे एवं थूमे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया णंदा पुक्खरिणी तं चेव जाव धूवं दलइ त्ता जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति त्ता सभं सुहम्मं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ त्ता जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामए गोलवट्टसमुग्गे तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ त्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ त्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ त्ता जिणसगहाओ लोभहत्थेणं पमज्जइ त्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ त्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ धूवं दलयइ त्ता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिनिक्खिवइ माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयइ, जेणेव सीहासणे तं चेव, जेणेव देवसयणिज्जे तं चेव, जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए तं चेव, जेणेव पहरणकोसेचोप्पालए तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ त्ता पहरणकोसं चोप्पालं लोमहत्थएणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चा दलेइ पुप्फारुहणं० आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयइ, जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेरेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ देवसयणिज्जं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ जाव धूवं दलयइ त्ता जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव पुरच्छिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ य वालरूवेए य तहेव, जेणेव, अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ त्ता तहेव सीहासणं च मणिपेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरच्छिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ त्ता जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवा० त्ता तहेव लोमहत्थयं परामुसति पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए दगधाराए अग्गेहिं वरेहि य गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेति त्ता मणिपेढियं सीहासणं च सेसं तं चेव, पुरच्छिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ य वालंरूवए तहेव जेणेव बलिपीढं तेणेव उवागच्छइ त्ता बलिविसज्जणं करेइ आभिओगिए देवे सद्दावेइ त्ता एवं व०- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्मुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करह त्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह, तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पडिसुणित्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु जाव अच्चणियं करेन्ति त्ता जेणेव सूरियाभे देवे जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सूरियाभे देवे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ त्ता नंदापुक्खरिणिं पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति त्ता हत्थपाए पक्खालेइ त्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरइ जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारित्थ गमणाए, तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि देवीहिय सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ त्ता सभं सुधम्मं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।४४। तए णं तस्स सुरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं दिसिभाएणं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरच्छिमिल्लेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि अग्गमहिसीओ चउसु भद्दासणेसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भतरियपरिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ अट्ठसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ दससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीतो बारससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहिं(सु)भद्दासणेहिं(सु)णिसीयंति, तए णं तस्स सुरियाभस्स देवस्स चउद्दिसिं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति, तं०- पुरच्छिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ दाहणेणंचत्तारी साहस्सीओ पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, ते णं आयरक्खा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेविज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा तिणियाणि तिसंधियाइं वयरामयाइं कोडीणि धणूइं पगिज्झ पडियाइयकंडकलावा णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खग्गपाणिणो पासपाणिणो नीलपीयरत्तचावचारुचम्मदंडखग्गपासधरा आयरक्खा रक्खोवगया गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्तपालिया पत्तेयं २ समयओ विणयओ किंकरभूया चिट्ठंति ।४५। सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिती पं० ?, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिती पं०, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, महिड्ढीए- महजुत्ती(ती)ए महब्बले महासये महासोक्खे महाणुभागे सूरियाभे देवे, अहो णं भंते ! सूरियाभे देवे महड्ढीए जाव महाणुभागे ।४६। सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवजुई से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमन्नागए पुव्वभवे के आसी पुव्वभवे के आसी किंनामए वा कोवा गुत्तेणं कयरंसि वा गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा किच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म जण्णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाब देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए ।४७। गोयमाई ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं व०- एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं० इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामे जणवए होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा, तीसे णं सेयवियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था रम्मे नंदणवणप्पगासे सव्वोउयफलसमिद्धे सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था महयाहिमवंत जाव विहरइ अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपजण(लज्ज)णे अधम्मसीलसमुयायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे हणछिंदभिंदापवत्तए चंडे रुद्दे खुद्दे लोहियपाणी साहसिए उक्कंचणवंचणमायानियडिकूड कवडसायिसंपओगबहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुक्खीसरिसवाण घायाए वहाए उच्छेणयाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए गुरूणं णो अब्भुट्ठेति णो विणयं पउंजइ समण० (माहणभिक्खुगाणं) सयस्सवि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ ।४८। तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकंता नाम देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया धारिणीवण्णओ पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ ।४९। तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे, से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया यावि होत्था, पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ।५०। तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउयवयंसए चित्ते णामं सारही होत्था अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए सामदंडभेयउवप्पयाणअत्थसत्थईहामइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए पएसिस्स रण्णो बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य ववहारेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूण सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चएविदिण्णविचारे रज्जधुराचिंतए आवि होत्था ।५१। तेणं कालेणं० कुणाला नाम जणवए होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा, तीसे णं सावत्थीए णगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था पोराणे जाव पासादीए, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था महयाहिमवंत जाव विहरइ, तए णं से पएसी राया अन्नया कयाई महत्थं महग्घं महरिहं विउलं राययारिहं पाहुडं सज्जावेइ त्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ त्ता एवं व०- गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि जाइं तत्थ रायकज्जाणि रायकिच्चाणि य रायनीतीओ य राययवहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहरात्तिकट्टु विसज्जिए, तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव पडिसुणेति तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ पएसिस्स रण्णो जाव पडिणिक्खमइ त्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति त्ता तं महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ कोडुं बयपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं व०- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह,तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेन्ति तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणिद्धगेविज्जे बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहपहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ त्ता चाउग्घंटं आसएं दुरूहेति बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं महया भडचडगररहपहकरविंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ त्ता सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरा वासेहिं वसमाणे केइयअद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छति त्ता सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता तुरए निगिण्हइ त्ता रहं ठवेति त्ता रहाओ पच्चोरुहइ तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ त्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ त्ता जियसत्तुं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ त्ता तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ, तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ त्ता चित्तं साराहिं सक्कारेइ सम्माणेति त्ता पडिविसज्जेइ रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ, तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ त्ता तुरए निगिहणइ त्ता रहं ठवेइ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जिमियभुत्तुत्तरागएऽविय णं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ।५२। तेणं कालेणं० पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे दंसणसंपन्ने चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जितिंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के वयप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहपहाणे अज्जवप्पहाणे भद्दवप्पहाणि लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चउदसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ त्ता सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।५३। तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणवूहेइ वा जणकलकलेइ वा जणबोलेइ वा जणउम्मीइ वा जणउक्कलियाइ वा जणसन्निवाएइ वा जाव परिसा पज्जुवासइ, तए णं तस्स चित्तस्स सारहिस्स तं महाजणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुप्पज्जित्था- किण्णं खलु अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा खंदमहेइ वा रुद्दमहेइ वा मउंदमहेइ वा नागमहेइ वा भूयमहेइ जक्खमहेइ वा थूभमहेइ वा चेइयमहेइ रुक्खमहइया वा गिरिमहेइ दरिमहेइ वा अगडमहेइ वा नईमहेइ वा सरमहेइ वा सागरमहेइ वा जं णं इमे बहवे उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा खत्तिया णाया कोरव्वा जाव इब्भा इब्भपुत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा जहोववाइए जाव अप्पेगतिया हयगया जाव अप्पे० गयगया अप्पे० पायचारविहारेणं महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति, एवं संपेहेइ त्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ त्ता एवं व०- किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे बहवे उग्गा भोगा० णिग्गच्छंति?, तए णं से कंचुइपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमणगहियविणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं व०-णोखलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसम्पन्ने जाव दूइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगतिया वंदणवत्तियाए जाव महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति, तए णं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं व०- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति, तए णं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ त्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ त्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ त्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ त्ता पच्चोरूहति त्ता जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ त्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदइ नमंसइ त्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे य महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तं०-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं, तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठजावहियए उट्ठाए उट्ठेइ त्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदइ नमंसइ त्ता एवं व०-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं एवमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं तहमेयं भंते !० अवितहमेयं भंते !० असंदिद्धमेयं० सच्चे णं एस अट्ठे जण्णं तुब्भे वदहत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ त्ता एवं व०-जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं एवं धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं चिच्चा विउलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिल प्पवालसंतसारसावएज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयंति णो खलु अहं ता संचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए जाव पंचाणुव्वतियं जाव गिहिधम्मं उवसंज्जित्ताणं विहरति, तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए चाउघंटं आसरहं दुरूहइ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।५४। तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले असहिज्जे देवासुरणागसुवण्णजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरूलगंधव्वमहोरगाई हिं देवेगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठ अट्ठिमिंजपेम्माणुरागत्ते अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं य पडिलाभेमाणे २ बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहि य अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ।५५। तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाई महत्थठ जाव पाहुडं सज्जेइ त्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ त्ता एवं व०-गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहित्तिकट्टु विसज्जिए, तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ जाव जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ त्ता सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ त्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति त्ता तं महत्थं जाव ठवइ ण्हाए जाव सरीरे सकोरंट० पायचारविहारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ त्ता सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छति त्ता केसिकुमारसमणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा जाव हट्ठ० उट्ठाए जाव एवं व०-एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहित्तिकट्टु विसज्जिए तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरिं, पासादीया णं भंते ! सेयविया णगरी एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया णगरी अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी पडिरूवा णं भंते ! सेतविया नगरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयक्यिं नगरिं, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं से चित्ते सारही केसीकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०-एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए तं चेव जाव समोसरह तं णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं, तए णं केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं व०-चित्ता ! से जहानामए वणसंडे सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे, से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ?, हंता अभिगमणिज्जे, तंसि च णं चित्ता ! वणसंडंसि बहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसंति जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाण ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसिं णं बहूणं दुपयजावसरिसिवाणं अभिगमणिज्जे ?, णो ति०, कम्हा णं ?, भंते ! सोवसग्गे, एवामेव (१४८) चित्ता ! तुब्भंपि सेयवियाए णयरीए पएसीनामं राया परिवसइ अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?, तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं व०-किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं ?, अत्थि णं भंते ! सेयवियाए नगरीए अन्ने बहवे ईसरतलवरजावसत्थवाहपभिइयो जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्सति पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं उवनिमंतिस्संति, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं व०-अवियाइ चित्ता ! (प्र० आविस्संति चित्ता !) जाणि (समोसरि प्र०) स्सामो।५६। तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ त्ता केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ त्ता जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं व०-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जहा सेयवियाए नयरीए निग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे कुणालाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ त्ता उज्जाणपालए सद्दावेइ त्ता एवं व०-जया णं देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुज्झे देवाणुप्पिया ! केसिकुमारसमणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह त्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह पाडिहारिएणं पीढफलग जाव उवनिमंतिज्जाह एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह, तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठजावहियया करयलपरिग्गहियं जाव एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति।५७। तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ त्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ त्ता जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता तुरए णिगिण्हइ त्ता रहं ठवेइ त्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहाओ पच्चोरूहइ त्ता तं महत्थं जाव गेण्हइ त्ता जेणेव पएसी राया तेणेवं उवागच्छइ त्ता पएसिं रायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ, तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्सं तं महत्थं जाव पडिच्छइ त्ता चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ त्ता पडिविसज्जेइ, तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठजावहियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ त्ता सेयवियं नगरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ त्ता तुरए निगण्हइ त्ता रहं ठवेइ त्ता रहाओ पच्चोरूहइ त्ता ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरूणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्दफरिसजाव विहरइ।५८। तए णं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाई पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ त्ता सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ त्ता पंचहि अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तए णं सेयवियाए नगरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा णिग्गच्छइ, तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठजावहियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छन्ति त्ता केसिं कुमारसमणं वंदंति नमंसंति त्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति णामगोयं पुच्छंति त्ता ओधारेंति त्ता एगंतं अवक्कमंति अन्नमन्नं एवं व०-जस्स णं देवाणुप्पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ दंसणं पत्थेइ दंसणं पीहेइ दंसणं अभिलसइ जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठजावहियए भवति से णं केसीकुमारसमणे पुव्वाणपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो पियं से भवउ, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति त्ता जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति त्ता चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति त्ता एवं व०-जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति जाव अभिलसंति जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठजाव भवह से णं अयं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे० समोसढे जाव विहरइ, तए णं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव (प्र० नरवरे) आसराओ अब्भुट्ठंति पायपीढाओ पच्चोरूहइ त्ता पाउआओ ओमुयइ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ त्ता करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व०-नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगए इडगयंतिकट्टु वंदइ नमंसइ ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ त्ता पडिविसज्जइ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं व०-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरूहित्ता सकोरंट० महया भडचडगरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहाइ जाव।५९। तए णं चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए तहेव एवं व०-एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव सयस्सविय णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसवाणं तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स० बहुगुणतरं होज्जा सयस्सविय णं जणवयस्स।६०। तए णं केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं व-एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए, तं०-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्मणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभंति सवणयाए, उवस्सयगयं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणं वा तं चेव जाव एतेणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभन्ति सवणयाए, गोयरग्गयं समणं वा माहणं वा जाव नो पज्जुवासइ णो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ णो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएणं ठाणेणं चित्ता ! केवलिपन्नत्तं० नो लभइ सवणयाए, जत्थवि णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थवि णं हत्थेणं वा वत्थेण वा छत्तेणं वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए, एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे णो लभइ केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए, चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं०-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएणवि जाव लभइ सवणयाए, एवं उवस्सयगयं गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ विउलेणं जाव पडिलाभेइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएणवि०, जत्थविंय समणेण वा माहणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थविय णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं चिट्ठइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो ?, तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं व०-एवं खलु भंते ! अण्णया कयाई कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नया चेव उवणीया तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाक्खेज्जाह छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं व०-अवियाइं चित्ता जाणिस्सामो, तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ नमंसइ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।६१। तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए कय नियमावस्सए सहस्सारस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ त्ता जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ त्ता पएसिं रायं करयल जाव तिकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ त्ता एवं व०-एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णंया चेव विणइया तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह, तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं व०-गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि त्ता जाव पच्चप्पिणाहिं, तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहियए उवट्ठवेइ त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ, तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठजावअप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ त्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ त्ता सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ, तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणं परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं व०-चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहिं रहं, तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ पएसिं रायं एवं व०-एस णं सामी ! मियवणे उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं पवीणेमो, तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं व०-एवं होउ चित्ता !, तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ त्ता तुरए णिगिण्हेइ त्ता रहं ठवेइ त्ता रहाओ पच्चोरूहइ त्ता तुरए मोएति त्ता पएसिं रायं एवं व०-एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं पवीणेमो, तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरूहइ चित्तेणं सारहिणा सद्धि आसाणं समं किलामं सम्मं पवीणेमाणे पासइ तत्थ केसीकुमारसमणं, महइमहालियाए महच्चपरिसाइ मज्झगयं महया २ सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासइ त्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति निव्विण्णाणणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए ववगए उत्तप्पसरीरे, एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ किं परिमाणेइं किं खाइ किं पियइ किं दलइ किं पयच्छइ जण्णं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया २ सद्देणं बुयाए ?, एवं संपेहेइ त्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तं सारहिं एवं व०-चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव बुयाइ, साएऽवि य णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ?, तए णं से चित्ते सारही पएसीरायं एवं व०-एस णं सामी ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव चउनाणोवगए अहोहिए अण्णजीवी, तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं व०-अहोहियं णं वदासि चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वदासि चित्ता !, हंता सामी ! आहोहिअण्णं वयामि०, अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! अहं एस पुरिसे ?, हंता सामी ! अभिगमणिज्जे, अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ?, हंता सामी ! अभिगच्छामो ।६२। तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ त्ता केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं व०-तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया ?, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-पएसी ! से जहाणामए अंकवाणियाइ वा संखवाणियाइ वा दंतवाणियाइ वा सुकं भंसि (प्र० जि) उकामा णो सम्मं पंथं पुच्छंति एवामेव पएसी ! तुब्भेवि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि, से णूणं तव पएसी ! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए, से णूणं पएसी ! अट्ठे समत्थे ?, हंता अत्थि ।६३। तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-से केणट्ठेणं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?, तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-एवं खलु पएसी अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे पं० तं०-आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे ओहिणाणे मणपज्जवण्णाणे केवलणाणे, से किं तं आभिणिबोहियनाणे ?,२ चउव्विहे पं० तं०-उग्गहो ईहा अवाए धारणा, से किं तं उग्गहे ?, २ दुविहे पं०, जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे, से किं तं सुयनाणे ?, २ दुविहे पं० तं०-अंगपविट्ठं च अंगबाहिरं च, सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ, ओहियणाणं भवपच्चइयं च खओवसमियं च जहा णंदीए, मणपज्जवनाणे दुविहे पं० तं०-उज्जुमई य विउलमई य तहेव, केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं, तत्थ णं ते से आभिणिबोहियनाणे से णं ममं अत्थि, तत्थ णं जे से सुयणाणे सेऽविय ममं अत्थि, तत्थ णं जे से ओहियणाणे सेऽविय ममं अत्थि, तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे सेऽविय ममं अत्थि, तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि, से णं अरिहंताणं भगवंताणं, इच्चेएणं पएसी ! अहं तव चउव्विहेणं छउमत्थेणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं जाणामि पासामि ।६४। तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-अहं णं भंते ! इहं उवविसामि ?, पएसी ! एसाए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए, तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसिकुमारसमणं एवं व०-तुब्भं णं भंते ! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी एसा रूई एस उवएसे एस हेऊ एस संकप्पे एसा तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तंजीवो णो तंसरीरं ?, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तंजीवो नो तंसरीरं, तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०- जति णं भंते ! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तंजीवो णो तंसरीरं, एवं खलु ममं अज्जए होत्था इहेव जंबूदीवे सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव सगस्सविय णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेति से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयंरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे तस्स णं अज्जगस्स णं अहं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते पिए मणुण्णे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ?, तं जति णं से अज्जए ममं आगतुं एवं वएज्जा-एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि तए णं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे तं मा णं नत्तुया ! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवितिं पवत्तेहिं मा णं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तंजीवो णो तंसरीरं, जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना० समणाउसो ! जहा तज्जीवो तंसरीरं, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ?, हंता अत्थि, जइ णं

तुमं पएसी ! तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं केणई पुरिसेणं ण्हाएणं जाव सव्वालंकारविभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सते कामभोगे पच्चणुभवमाणिं पासिज्जसि तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ?, अहण्णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा पायच्छिन्नगं वा सूलाइयगं वा सूलभिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा, अह णं पएसी ! से पुरिसे तुमं एवं व०-मा ताव मे सामी ! मुहुत्तगंहत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जावतावाहं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं एवं वयामि-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं केई पावाइं कम्माइं समायरउ मा णं सेऽवि एवं आवइं पाविज्जिहिइ जहा णं अहं, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे, एवामेव पएसी ! तवावि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ से णं अम्ह वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्नो तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ, अहुणोववन्ने नरएसु नेरइए से णं तत्थ सुमहब्भूयं वेयणं वेदेमाणे माणुस्सं लोगं हव्व० णो चेव णं संचाएइ, अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरयपालेहिं भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ, अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं० नो चेव णं संचाएइ, एवं णेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं० नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववन्ने नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं० णो चेव णं संचाएइ०, तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तंजीवो तंसरीरं १ ।६५। तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा० इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ-एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा-एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु उववण्णा तं तुमंपि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि तए णं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं सम जाव उववज्जिहिसि तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोइज्जा जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तंजीवो तंसरीरं, जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं णो एवं वयति तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा० जहा तंजीवो तंसरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, तए णं केसीकुमारसमणे पएसीरायं एवं व०-जति णं तुमं पएसी ! ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केई य पुरिसे वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा-इ (ए) ह ताव सामी ! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि ?, णो ति०, कम्हा णं ?, भंते ! असुई वा असुइसामंतो वा, एवामेव पएसी ! तवावि अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरति सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे० किमंग पुण पासणयाए ?, सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं० णो चेव णं संचाएइ०, अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से णं माणुसे भोगे नो आढाति नो परिजाणाति से णं इच्छिज्ज माणुसं० नो चेव णं संचाएति०, अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवति दिव्वे पिम्मे संकते भवति से णं इच्छेज्जा माणुसं० णो चेव णं संचाएइ, अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ-इयाणिं गच्छं मुहुत्तं

गच्छं जाव इह अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति से णं इच्छेज्जा माणुस्सं० णो चेव णं संचाएइ०, अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे भवइ उड्ढंपिय णं चत्तारि पंच जोयणसयाइं असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ से णं इच्छेज्जा माणुसं० णो चेव णं संचाइज्जा, इच्चेएहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तंजीवो तंसरीरं २ ।६६। तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा० इमेणं पुण मे कारणेणं णो उवागच्छति, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाई बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायगदंडणायगईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणाव. इसत्थवाहमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरनिगमदूयसंधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे विहरामि तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सलोद्धं सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं चोरं उवणेंति, तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अओकुंभीए पक्खिवावेमि अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि अएण य तउएण य आयावेमि आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तए णं अहं अण्णया कयाई जेणामेव सा अओकुंभी तेणामेव उवागच्छामि त्ता तं अओकुंभीं उग्गलच्छा. वेमि त्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केई छिड्डेइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा राई वा जओ णं से जीवे अंतोहितो बहिया णिग्गए जइ णं भंते ! तीसे अओकुभीए होज्जा केई छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तंजीवो तंसरीरं, जम्हा णं भंते ! तीसे अओकुभीए णत्थि केई छिड्डे वा जाव निग्गए तम्हा सुपतिट्ठिया मे पन्ना जहा तंजीवो तसरीरं नो अन्नो सरीरं, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-पएसी ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओलित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा, अह णं केई पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो २ अणुप्पविसइ त्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया २ सद्देणं तालेज्जा से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ?, हंता णिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केई छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी जीवेवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भेच्चा पव्वयं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अण्णो जीवो तं चेव ३ । तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा० इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाई बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति, तए णं अहं (तं) पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि त्ता अयोकुंभीए पक्खिवामि त्ता अओमएणं पिहावेमि जाव पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तए णं अहं अन्नया कयाई जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि त्ता तं अओकुंभि उग्गलच्छावेमि त्ता तं अउकुंभिं किमिकुम्भिंपिव पासामि णो चेव णं तीसे अओकुंभीए केई छिड्डेइ वा जाव राई वा जतो णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुपविट्ठा, जति णं तीसे अओकुंभीए होज्ज केई छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा तेणं अहं सद्दहेज्जा जहा अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अओकुभीए नत्थि कोई छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा तम्हा सुपतिट्ठिया मे पण्णा० जहा तंजीवो तंसरीरं तं चेव, तए णं केसीकुमारसमणे पएसीं रायं एवं व०-अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाई अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ?, हंता अत्थि, से णूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति ?, हंता भवति, अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केई छिड्डेइ वा जेणं जोई बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठे ?, नो इणमट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा बहियाहिंतो अणुपविसइ तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव ४ ।६७। तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा० इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ, अत्थि णं भंते ! से जहानामए केई पुरिसे तरूणे जाव सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?, हंता पभू, जति णं भंते ! सोच्चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए तो णं अहं सद्दहेज्जा० जहा अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! से चेव से पुरिसे जाव मंदविन्नाणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए तम्हा सुपइट्ठिया मे पण्णा० जहा तंजीवो तं चेव, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-से जहानामए केई पुरिसे तरूणे जाव सिप्पोवगए णवएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?, हंता पभू, सो चेव णं पुरिसे तरूणे जाव निउणसिप्पोवगते कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लिएणं उसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, कम्हा णं ?, भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति, एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव ५ ।६८। तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा० इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ अत्थि णं भंते ! से जहानामए केई पुरिसे तरूणे जाव सिप्पोवगते पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ?, हंता पभू, सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिंतयाविणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, जति णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा० तहेव जम्हा णं भंते !से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तम्हा सुपतिट्ठिता मे पण्णा० तहेव, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-से जहाणामए केई पुरिसे तरूणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियपिडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए ?, हंता पभू, पएसी ! से चेव णं पुरिसे तरूणे जाव सिप्पोवगए जुन्नियाए दुब्भलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं सिढिलतयापिणद्धएहिं सिक्कएहिं (१४९) जुण्णएहिं दुब्बलिएहिं घुणखइएहिं पच्छिपिडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए ?, णो तिण०, कम्हा णं ?. भंते ! तस्स पुरिसस्स जुन्नाइं उवगरणाइं भवंति, पएसी ! से चेव से पुरिसे जुन्ने जाव किलंते जुन्नोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ६ ।६९। तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! जाव नो उवागच्छइ एवं खलु भंते ! जाव विहरामि तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति तए णं अहं तं पुस्सिं जीवंतगं चेव तुलेमि तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि त्ता मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स केई आणत्ते वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरूयत्ते वा लहुयत्ते वा, जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स केई अन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केई अन्नत्ते वा० लहुयत्ते वा तम्हा सुपतिट्ठिया मे पन्ना जहा तंजीवो तंचेव, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाई वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ?, हंता अत्थि, अत्थि णं पएसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केई आणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवस्स अगुरूलहुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केई आणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तं चेव ७ ।७०। तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-अत्थि णं भंते ! एसा जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया जाव चोरं उवणेंति तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि तए णं अहं तं पुरिसं दुहाफालियं करेमि त्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि एवं तिहा चउहा संखेज्जफालियं करेमि णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, जइ णं भंते ! अहं तं पुरिसं दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि वा जीवं पासंतो तो णं अहं सद्दहेज्जा नो तं चेव, जम्हा णं भंते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि तम्हा सुपतिट्ठिया मे पण्णा जहा तंजीवो तंसरीरं तं चेव, तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व-मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ, के णं भंते ! तुच्छतराए ?, पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसे वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए जाव किंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं व०-अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं पविसामो एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्ह असणं० साहेज्जासि अह तंमि जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं० साहेज्जासित्तिकट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठ तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तन्तरस्स तेसिं पुरिसाणं असणं० साहेमित्तिकट्टु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव जोतिभायणे तेणेव उवागच्छइ जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासति तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ त्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति नो चेव णं तत्थ जोइं पासति तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ फरसुं गिण्हइं तं कट्ठं दुहाफालियं करेइ सव्वतो समंता समभिलोएइ णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ एवं जाव संखेज्जफालियं करेइ सव्वतो समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहाफालिए वा जाव संखेज्जफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिसंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ त्ता परियरं मुयइ त्ता एवं व०-अहो ! मए तेसिं पुरिसाणं असणे० नो साहिएत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ, तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति त्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति त्ता तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति त्ता एवं व०-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि ?, तए णं से पुरिसे एवं व०-तुज्झे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं व०-अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं जाव पविट्ठा तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंतरस्स तुज्झं असणं० साहेमित्तिकट्टु जेणेव जोई जाव झियामि, तए णं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं व०-गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छह जा णं अहं असणं० साहेमित्तिकट्टु परियरं बंधइ त्ता परसुं गिण्हइ त्ता सरं करेइ सरेण अरणिं महेइ जोइं पाडेइ त्ता जोइं संधुक्खेइ तेसिं पुरिसाणं असणं० साहेइ तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं० आसाएमाणा वीसाएमाणा जाव विहरंति जिमियभुत्तुत्तरागयाविय णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं व०-अहो णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे मूढे अपंडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जेणं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहाफालियंसि वा० जोतिं पासित्तए, से एएणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ ८ ।७१। तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं व०-जुत्तए णं भंते ! तुब्भं इयच्छेयाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए (ए) महालियाए महच्चपरिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए एवं निब्भंछणाहिं निच्छोडणाहिं० ?, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-जाणासि णं तुमं पएसी ! कति परिसाओ पं० ?, भंते ! जाणामि चत्तारि परिसाओ पं० तं०-खत्तियपरिसा गाहावइपरिसा माहणपरिसा, इसिपरिसा जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पं० ?, हंता ! जाणामि जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ, जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ, जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ, जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइअमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ, एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामंवामेणं दंडंदंडेणं पडिकूलंपडिकूलेणं पडिलोमंपडिलोमेणं विवच्चासंविवच्चासेणं वट्टसि, तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०- एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते तए णं ममं इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था-जहा जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामंवामेणं जाव विवच्चासंविवच्चासेणं वट्टिस्सामि तहा तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च करणं च करणोवलंभं च दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि, तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं जाव विवच्चासंविवच्चासेणं वट्टिए, तए णं केसीकुमारसमणे पएसीरायं एवं व०-जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पं० ?, हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पं० तं०-देइ नामेगे णो सण्णवेइ सन्नवेइ नामेगे नो देइ एगे देइवि सन्नवेइवि एगे णो देइ णो सण्णवेइ, जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अव्ववहारी ?, हंता जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी तत्थ णं जे से पुरिसे देइवि सन्नवेइवि से पुरिसे ववहारी तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सन्नवेइ से णं अववहारी, एवामेव तुमंपि ववहारी, णो चेव

णं तुमं पएसी अववहारी ।७२। तए णं पएसी ! राया केसिकुमारसमणं एवं व०-तुज्झे णं भंते ! इयच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते ! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसित्तए ?, तेणं कालेणं० पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं व०-पाससि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइकायं एयंतं जाव तं तं भावं परिणमंतं ?, हंता पासामि, जाणासि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ असुरो० णागो वा० किन्नरो वा चालेइ किंपुरिसो वा चालेइ महोरगो वा चालेइ गंधव्वो वा चालेइ ?, हंता जाणामि, णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ वाउयाए चालेइ, पाससि णं तुमं पएसी ! एतस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकामस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं ?, णो तिणट्ठे०, जइ णं तुमं पएसी राया ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि ?, एवं खलु पएसी ! दस ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं०-धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं गंधं वायं अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सइ वा नो वा, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं०-धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव ९ ।७३। तए णं से पएसीराया केसिं कुमारसमणं एवं व०-से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?, हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे, से णूणं भंते ! हत्थीउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पाकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं आहारनीहारउस्सासनीसासइड्ढीपहावजुई अप्पतराए चेव, एवं च कुंथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरिय जाव ?, हंता पएसी ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव तं चेव, कम्हा णं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?, पएसी ! से जहाणामए कूडागारसाला सिया जाव गंभीरा अह णं केई पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो २ अणुपविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घणनिचियनिरंतराणि णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेति त्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, णो चेव णं बाहिं, अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो ओभासेइ णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवं किलिजेणं गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं आढतेणं अद्धाढतेणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं अट्ठभाइयाए चाउब्भाइयाए सोलसियाए छत्तीसियाए चउसट्ठियाए दीवचंपएणं तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो ओभासति० नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं णो चेव णं कूडागारसालं णो चेव णो कूडागारसालाए बाहिं, एवामेव पएसी ! जीवेऽवि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदि णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सच्चित्तं करेइ खुडिडयं वा महालियं वा तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा तं चेव १० ।७४। तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एस सन्ना जाव समोसरणे जहा तज्जीवो तंसरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं तयाणंतरं च णं ममं पिउणोऽवि एस सण्णा तयाणंतरं ममवि एसा सण्णा जाव समोसरणं तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं व०-मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुतावए भवेज्जासि जहा व से पुरिसे अयहारए, के णं भंते ! से अयहारए ?, पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थी अत्थगवेसी अत्थलुद्धगा अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अकामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अकामियाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागरं पासंति, अएणं सव्वतो समंता आइण्णं विच्छिण्णं संथडं उवत्थडं फुडं गाढं अवगाढं पासति त्ता हट्ठतुट्ठजावहियया अन्नमन्नं सद्दावेंति त्ता एवं व०-एस णं देवाणुप्पिया ! अयभंडे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारह बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति त्ता अयभारं बंधंति त्ता अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तए णं ते पुरिसा अकामियाए जाव अडवीए किंचिदेस अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति तउएणं आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं व०-एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे जाव मणामे अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारए छड्डेत्ता तउयभारए बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति त्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयभारं छड्डेंति त्ता तउयभारं बंधंति, तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं व०-एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे जाव सुबहुं अए लब्भति तं छड्डेहिं णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं तउयभारगं बंधाहि, तए णं से पुरिसे एवं व०-दूराहडे मे देवा० ! अए चिराहडे मे देवा० ! अए अइगाढबंधणबद्धे मे देवाणु० ! अए असिलिट्ठबंधणबद्धे देवा० ! अए धणियबंधणबद्धे देवा० ! अए णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, एवं तंबागरं रूप्पागरं सुवन्नागरं रयणागरं वइरागरं, तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं नगराइं तेणेव उवागच्छन्ति त्ता वयरणिक्कणयं करेंति त्ता सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति त्ता अट्ठतलमूसियपासायवडंसगे कारावेंति ण्हाया कयबलिकम्मा उप्पिं पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइं गमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरूणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरंति, तए णं से पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ अयभारगं गहाय अयविक्किणणं करेति त्ता तंसि अप्पमोल्लंसि निट्ठियंसि झीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए जाव विहरमाणे पासति त्ता एवं व०-अहो णं अहं अधन्नो अपुन्नो अकयत्थो अकलयक्खणो हिरिसिरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे, जति णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा सुणंतओ तो णं अहंपि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरंतो, से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ-मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुतावए भविज्जासि जहा व से पुरिसे अयभारिए ११ ।७५। एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वंदइ जाव एवं व०-णो खलु भंते ! अहं पच्छाणुतावए भविस्सामि जहा व पुरिसे अयभारिए तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध०, धम्मकहा जाव चित्तस्स तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ त्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।७६। तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं व०-जाणासि तुमं पएसी ! कई आयारिया पं० ?, हंता जाणामि, तओ आयारिआ पं० तं०-कलायरिए सिप्पायरिए धम्मायरिए, जाणासि णं तुमं पएसी ! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ?, हंता जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मज्जावेज्जा मंडावेज्जा भोयाविज्जा वा विउलं जीवितारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा, जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारेणं उवनिमंतेज्जा, एवं च ताव तुमं पएसी ! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामंवामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं व०-एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडस्स देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एतमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामित्तएत्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए, तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते हट्ठतुट्ठजावहियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ अंतेउरपरियाल सद्धि संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ नमंसइ एयमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामेइ ।७७। तए णं केसीकुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महतिमहालियाए महच्चपरिसाए जाव धम्मं परिकहेइ, तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति त्ता केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ त्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिरायं एवं व०-मा णं तुमं पएसी ! पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा से वणसंडेइ वा णट्टसालाइ वा इक्खुवाडएइ वा खलवाडएइ वा, कहं णं ? भंते !, वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवति, जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरियगरिरेज्जमाणे णो सिरीए अईव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ तया णं जुन्ने झडे परिसडियपंडुपत्ते सुक्करूक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ तया णं वणे णो रमणिज्जे भवति, जया णं णट्टसालावि गिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ तया णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ जया णं नट्टसाला णो गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ तया णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवति, जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ सिज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ, जया णं खलवाडे उच्छुब्भइ उडुइज्जइ मलइज्जइ पुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवति जया णं खलवाडे नो उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे भवति, से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ-मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडेइ वा०, तए णं पएसी केसिं कुमारसमणं एवं व०-णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा, अहं णं सेयवियानगरीपमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि-एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि एगं भागं कुट्ठागारे छुभिस्सामि एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि एगेणं भागेणं महतिमहालियं कूडागारसालं करिस्सामि, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं० उवक्खडावेत्ता बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं पंथियपहियाणं परिभाएमाणे २ बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं जाव विहरिस्सामित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।७८। तए णं से पएसी राया कल्लं जाव तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भाए कीरइ, एगं भागं बलवाहणंस्स दलइ जाव कूडागारसालं करेइ, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडेत्ता बहूणं समण जाव परिभाएमाणे विहरइ।७९। तए णं से पएसी राया समणोवासए अभिगयजीवाजीवे० विहरइ, जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरति, तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं जाव अंतेउरं च ममं च जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थपओएण वा अग्गिपओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ त्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ त्ता एवं व०-जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च ममं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पयोगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए, तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रन्नो इमं रहस्सभेयं करिस्सइत्तिकट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य अंतराणि य पडिजागरमाणी २ विहरइ, तए णं सूरियकंता देवी अन्नया कयाई पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ असणे जाव साइमे सव्ववत्थगंधमल्लालंकारे विसप्पजोगं पउंजइ, पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं वत्थं जाव अलंकारं निसिरेइ. तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं० आहारेमाणस्स० सरीरगंमि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा कडुया चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा पित्तजरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरइ।८०। तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता सूरियकंताए देवीए मणसावि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता पोसहसालं पमज्जइ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ त्ता दब्भसंथारगं संथरेइ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ त्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं० सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व०-नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थु णं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयंतिकट्टु वंदइ नमंसइ पुव्विपि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलगपाणाइवाए पच्चक्खाए जाव परिग्गहे तं इयाणिंपिय णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोयं पच्चक्खामि सव्वं असणं० चउव्विहंपि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि जंपिय मे इमं इट्ठं जाव फुसंतुत्तिकट्टु एयंपिय णं चरिमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए जाव उववण्णे, तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, तं०-आहारपज्जत्तीए सरीर० इंदिय० आणापाण० भासामणपज्जत्तीए, तएवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिसमन्नागए ।८१। सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पं० ?,गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, से णं सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं०-अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णाइं बहुधणबहुजातरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डिपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूताइं तत्थ अन्नयरेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चाइस्सइ, तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ तए णं तस्स दारयस्स० नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वितिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेहिंति ततियदिवसे चंदसूरदंसणिगं करिस्संति छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेस्संति त्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अलंकिया भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया ते मित्तणाइजाव परिजणेण सद्धिं विउलं असणं० आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति जिमियभुत्तुत्तरागयाविय णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तणाइजावपरिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेस्संति सम्माणिस्संति त्ता तस्सेव मित्तजावपरिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति जम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्हं धम्मे दढा पइण्णा जाया तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे (इ) णामेणं, तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करिस्संति दढपइण्णाइ य २, तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरियदरिसणं च धम्मजागरियं च नामधिज्जकरणं च पज्जेमणगं च पडिवद्धावणगं च पचंकमणगं च कन्नवेहणं च संवच्छरपडिलेहणगं च चूलोवणयं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिस्संति ।८२। तए णं दढपतिण्णे दारए पंचधाईपरिक्खित्ते खीरधाईए मज्जणधाईए अंकधाईए मंडणधाईए किलावणधाईए, अन्नाहि य बहूहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं वडभियाहिं बब्बरीहिं बउसियाहिं जोण्हियाहिं पण्णवियाहिं ईसिणियाहिं वारूणियाहिं लासियाहिं लाउसियाहिं दमिलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मुरंडीहिं पारसीहिं णाणादेसीविदेसपरिमंडियाहिं सदेसणेवत्थगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालतरूणिवंदपरियालपरिवुडे वरिसधरकंचुइमहयरवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे अंगेण अंगं परिभुज्जमाणे उवगिज्जेमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ अवतासि० २ परिचुंबिज्जमाणे रम्मेसु मणिकोट्टिमतलेसु परंगमाणे २ गिरिकंदरमल्लीणेविव चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवडिढस्सइ, तए णं तं दढपतिण्णं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउअमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति, तए णं से कलायरिए तह दढपतिण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरूयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ गंथओ (करणओ) पसिक्खावेहि य सेहावेहि य, तं०-लेहं गणियं रूयं नट्टं गीयं वाइयं सरगयं पुक्खरगयं समतालं जूयं १० जणवयं पासगं अट्ठावयं पारेकव्वं दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं २० अज्जं पहेलियं मागहियं णिद्दाइयं गाहं गीहयं सिलोगं हिरण्णजुत्तिं सुवण्णजुत्तिं आभरणविहिं ३० तरूणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं गोणलक्खणं कुक्कुडलक्खणं छत्तलक्खणं चक्कलक्खणं दंडलक्खणं ४० असिलक्खणं मणिलक्खणं कागणिलक्खणं वत्थुविज्जं णगरमाणं खंधवारं माणवारं पडिचारं वूहं पडिवूहं ५० चक्कवूहं गरूलवूहं सगडवूहं जुद्धं निजुद्धं जुद्धाइजुद्धं अट्ठिजुद्ध मुट्ठिजुद्धं बाहुजुद्धं लयाजुद्धं ६० ईसत्थं छरूप्पवायं धणुवेयं हिरण्णपागं सुवण्णपागं - माणपागं धाउपागं, सुत्तखेड्डं वट्टखेड्डं णालियखेड्डं पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं सज्जीवनिज्जीवं सउणरूय ७२ मिति, तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दरगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरूयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिंति,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति त्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलइस्संति विउलं जीवियारिहं० दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति ।८३। तए णं से दढपतिण्णे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते बावत्तरि-(१५०) कलापंडिए अट्ठारसविहदेसोप्पगारभासाविसारए णवंगसुत्तपडिबोहिए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारूवेसे संगयगयहसियभणियचिट्ठियविलास-संलावनिउणजुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी यावि भविस्सइ, तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अन्नभोगेहि य पाणभोगेहिं य लेणभोगेहिं य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतिहिंति, तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोएहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुच्छिहिति णो अज्झोववज्जिहिति से जहाणामए पउमुप्पलेति वा पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेति वा पंके जाते जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव दढपइप्पणेऽवि दारए कामेहिं जाते भोगेहिं संवड्ढिए णोवलिप्पिहिति० मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं, से णं तथारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहि बुज्झिहिति केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति, से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणोइव तेयसा जलंते, तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खन्तीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियफलणिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे णिरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति, तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणिहिति तं०-आगतिं गतिं ठितिं चवणं उववायं तक्कं कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ, तए णं दढपइन्ने केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोचबंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणं अच्छत्तगं अणुवाहणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणणाइं परेसिं हीलणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तालणाओ उच्चावया विरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेइ त्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ।८४। सेवं भंते ! २ त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । णमो जिणाणं जियभयाणं, णमो सुयदेवयाए भगवतीए, णमो पण्णत्तीए भगवईए, णमो भगवओ अरहओ पासस्स पस्से सुपस्से पस्सवणा णमो ।८५॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org